अमृत विचार
लोक दर्पण
रविवार, 5 मई 2024
www.amritvichar.com

कुंभ नगरी प्रयागराज में सनातन धर्म की अलख जगाने व सनातन धर्म की रक्षा करने के साथ मतांतरण पर रोक लगाने के लिए ऐतिहासिक जूना अखाड़े ने एक अनूठी पहल की है। पहली बार अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि के किसी संत को 'जगद्गुरु' की उपाधि से सम्मानित किया गया है। देश के 13 अखाड़ों में से एक जूना अखाड़े ने महामंडलेश्वर महेंद्रानंद गिरि को यह उपाधि प्रदान की। महेंद्रानंद के शिष्य कैलाशानंद गिरि को महामंडलेश्वर और रामगिरि को श्री महंत की उपाधि दी गई। दोनों संतों को पिछले माह 29 अप्रैल अर्थात् सोमवार को प्रयागराज में जूना अखाड़े के सिद्ध बाबा मौज गिरी आश्रम में मंत्रोच्चार के बीच दीक्षा दी गई। वर्ष 2021 में हरिद्वार कुंभ में जूना अखाड़े ने महेंद्रानंद को महामंडलेश्वर की उपाधि प्रदान की थी। स्वामी महेंद्रानंद मूल रूप से गुजरात के राजकोट जिले के बनाला गांव के रहने वाले हैं। इस समारोह में शामिल होने के लिए काशी सुमेरु पीठाधीश्वर स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था। काशी सुमेरु पीठाधीश्वर स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती के अलावा जूना अखाड़े के संरक्षक महंत हरि गिरि, अध्यक्ष महंत प्रेम गिरि और गाजियाबाद के दूधेश्वर धाम के पीठाधीश्वर स्वामी नारायण गिरि भी समारोह में मौजूद थे।

जूना अखाड़े की अनूठी पहल

मिथलेश त्रिपाठी
प्रयागराज

इस अवसर पर जूना अखाड़ा के महंत प्रेम गिरि ने कहा कि जूना अखाड़ा संन्यासी परंपरा में जाति और वर्ग भेदभाव को खत्म करने की दिशा में काम कर रहा है। अन्य धर्मों द्वारा हिंदुओं के बीच मतभेद पैदा कर धर्मांतरण की प्रक्रिया को रोकने के लिए इस परंपरा को और समृद्ध करने की आवश्यकता महसूस की गई। महाकुंभ-2025 से पहले इस दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि से आने वाले संतों को जगद्गुरु,महामंडलेश्वर और श्री महंत जैसी महत्वपूर्ण उपाधियों से सम्मानित किया जा रहा है।

महेंद्रानंद गिरि अनुसूचित जाति की पृष्ठभूमि से आते हैं,लेकिन धर्म के प्रति उनके समर्पण के कारण जगद्गुरु की उपाधि प्रदान की गई। वर्ष 2018 में महामंडलेश्वर बनने वाले वंचित समाज के कन्हैया प्रभुनंद गिरि जी कहते हैं-धर्मगुरु बनने के बाद उनका जीवन बदल गया,जो हेय दृष्टि से देखते थे,वे सम्मान करने लगे हैं। लोभ-भय,समाज से उपेक्षित व सरकारी सुविधाओं से वंचित लोग मतांतरण करते हैं। इसे देखते हुए जूना अखाड़ा के संन्यासी इनके बीच समय व्यतीत करके उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में जुटे हैं। मेल-मिलाप करके उनके बीच के व्यक्ति को धर्मगुरु बनाने की योजना है। बीते दिनों सिद्ध पीठ मौज गिरी आश्रम यमुना तट पर जूना अखाड़े के नरेंद्रानंद सरस्वती और जूना अखाड़े के संरक्षक हरि गिरि महाराज ने महेंद्रानंद गिरि को सिंहासन पर आसीन करके जगद्गुरु की छत्र व चंवर को भेंट किया। स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती ने बताया कि महेंद्रानंद गिरि कई वर्ष से समाज के प्रत्येक वर्ग में धर्म व अध्यात्म की अलख जगा रहे हैं। जूना अखाड़ा ने पिछले 10 वर्षों में 5,150 से अधिक वंचित समाज के संन्यासियों को सनातन धर्म से जोड़ा है। इनके बीच से योग्य लोग महामंडलेश्वर बनाए जाएंगे। जूना अखाड़े के संरक्षक हरि गिरि महाराज कहते हैं कि पद जाति से नहीं, योग्यता के आधार पर मिलना चाहिए। इसी कारण अखाड़े ने आदिवासी एवं वंचित समाज के योग्य लोगों को महामंडलेश्वर बनाने का निर्णय लिया है।

जूना अखाड़े का संक्षिप्त परिचय

जूना अखाड़ा सबसे बड़ा अखाड़ा है। इस अखाड़े में करीब पांच लाख से अधिक नागा साधु व संन्यासी हैं। इसमें नागा साधुओं की संख्या अत्यधिक हैं। जूना अखाड़े की स्थापना सन् 1145 में उत्तराखंड के कर्णप्रयाग में हुई थी। इस अखाड़े को भैरव अखाड़ा भी कहते हैं। इस अखाड़े के ईष्ट अराध्य रुद्रावतराय दत्तात्रेय हैं। इसका केंद्र वाराणसी के हनुमान घाट पर माना जाता है। हरिद्वार के माया मंदिर के पास इनका आश्रम हैं। इस अखाड़े में देश के अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार महंत होते हैं,जो कि अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार कार्य देखते हैं। जूना अखाड़ा एक खास प्रणाली से जुड़ा है। ये अखाड़ा एक पूरा समाज है,जहां साधुओं के 52 परिवारों के सभी मुखियों की एक कमेटी बनाईं जाती है। ये सभी अखाड़े के लिए सभापति का चुनाव करते हैं। एक बार चुने गए सभापति का पद जीवन भर के लिए उसी का हो जाता है। ये चुनाव कुंभ मेले के दौरान ही होता है। अखाड़े की चार मढ़िया हैं। इन मढ़ियों में महंत से लेकर कष्ट कौशल महंत और कोतवाल तक नियुक्त किए जाते हैं।

कैसे कार्य करते हैं अखाड़े

अखाड़ों में भी आध्यात्मिक और कार्यकारी मुखिया होते हैं। आचार्य महामंडलेश्वर आध्यात्मिक मुखिया होते हैं। इनके बाद आते हैं महामंडलेश्वर और मंडलेश्वर। रोजमर्रा की गतिविधियां इत्यादि व्यवस्थति करने के लिए होते हैं श्रीमहंत, महंत और सचिव। आनंद गिरि ने बताया कि अखाड़ों को चलाने के लिए पांच लोगों का चुनाव हर छह साल में होने वाले कुंभ में किया जाता है। इन्हें श्री पंच कहते हैं।

संन्यास के बाद संत की कोई जाति नहीं होती

श्री पंच दशनाम जूना अखाड़े में अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि से आने वाले को जगद्गुरु बनाने पर साधु-संतों में प्रसन्नता है। संतों का मानना है कि समाज के एक बड़े वर्ग के ऐसे संतों को अपने से जोड़ने को प्रतिष्ठित पद दिया ही जाना चाहिए। वैसे भी, संन्यास ग्रहण करने के बाद किसी भी व्यक्ति की कोई जाति नहीं रह जाती है। वहीं अखाड़े के वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी यतींद्रानंद गिरि ने इस पहल की सराहना की है।

अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि के दस संतों का पट्टाभिषेक

अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि के दस संतों का पट्टाभिषेक जूना अखाड़े के सिद्ध बाबा मौज गिरि आश्रम में मंत्रोच्चार के बीच किया गया है। काशी सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती महाराज, जूना अखाड़े के अंतर्राष्ट्रीय सभापति श्री महंत प्रेम गिरि जी महाराज, श्री दूधेश्वर पीठाधीश्वर के साथ ही जूना अखाड़े के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री महंत नारायण गिरी और महामंडलेश्वर डॉ वैभव गिरी ने उपाधि धारण करने वाले संतों का सम्मान किया। महेंद्रानंद और कैलाशानंद को सिंहासन पर आसीन करके छत्र और चंवर भी भेंट किया गया।

2018 में बनाया गया अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि का पहला महामंडलेश्वर

सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने व मजबूत करने के लिए जूना अखाड़े ने अनुसूचित जाति पृष्ठभूमि से आने वाले संत स्वामी कन्हैया प्रभु नंदन गिरि को 25 अप्रैल 2018 को महामंडलेश्वर बनाया था। सनातन के 13 अखाड़ों में जूना अखाड़ा ही ऐसा है,जो दलित वर्ग से आने वाले संतो को जगद्गुरु व महामंडलेश्वर के साथ श्री महंत की पदवी भी प्रदान कर रहा है। वर्ष 2019 के कुंभ से पहले भी जूना अखाड़े ने ही किन्नर अखाड़े को भी अपने साथ जोड़ते हुए मान्यता प्रदान की थी।

अखाड़े की परंपरा को बखूबी निभाया

जूना अखाड़े के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता महंत नारायण गिरि ने बताया कि महेंद्रानंद गिरि के जगद्गुरु बनना मील का पत्थर साबित होगा। इससे एक बड़े वर्ग के लोगों का धर्मांतरण तो रुकेगा ही, सनातन धर्म का प्रभाव भी विश्व में बढ़ेगा। जगद्गुरु की उपाधि मिलने के बाद स्वामी महेंद्रानंद गिरी ने कहा कि वह बचपन से ही संतों के बीच रहकर सनातन धर्म की सेवा करते रहे हैं। धर्म के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। समाज के उत्थान के लिए उनका समर्पण सदैव रहेगा। मौजूदा समय में उनके पास 700 से अधिक संन्यासी हैं जिसमें पिछड़ी जाति, अनुसूचित-जनजाति और आदिवासी समाज के लोग शामिल हैं। महेंद्रानंद गिरि ने कहा कि उनका लक्ष्य सिर्फ यह है कि हिंदू धर्म का कल्याण और उत्थान किस तरह से किया जाए। इसके लिए वह लगातार प्रयास करते चले आ रहे है। मतांतरण रोकने में अब जूना अखाड़े के देश आगे आएंगे। देश में मतांतरण रोकने और सनातन धर्म का प्रभाव बढ़ाने की दिशा में जूना अखाड़ा लगातार काम कर रहा है।

पद के लिए देनी होती है परीक्षा

जूना अखाड़ा में महामंडलेश्वर पद के लिए संबंधित को परीक्षा देना पड़ता है। उन्हें पहले अखाड़े के किसी आश्रम से जोड़कर सनातन धर्म के ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता है। अगर अनपढ़ हैं तो उन्हें पढ़े-लिखे संन्यासी धर्मग्रंथों का मर्म आत्मसात कराते हैं। घर-परिवार से दूर रहकर भक्ति व त्याग वाली दिनचर्या अपनानी होती है। पांच वर्ष तक इसमें खरा उतरने वालों को पद दिया जाता है।

स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि

संन्यास की परंपरा में जाति के आधार पर भेदभाव नहीं माना जाता है। जाति के आधार पर समाज को बांटने की परंपरा सनातन परंपरा नहीं है। मुगल काल और अंग्रेजों ने हिंदू धर्म को कमजोर करने के लिए ऐसा किया। अब समय आ चुका है कि जाति रहित समाज के निर्माण के लिए रहित समाज की स्थापना सनातन हिंदू में होनी चाहिए। श्री पंचदस नाम जूना अखाड़ा ने इससे पूर्व भी लंबे समय से अपेक्षित और उपहास का पात्र बने किन्नर समाज को मान सम्मान देकर समाज में प्रतिष्ठित किया है।

कौशल्यांनद गिरि (किन्नर अखाड़ा)

महामंडलेश्वर कौशल्यानंद गिरि 'टीना मां' का कहना है कि जूना अखाड़े के हर फैसले का स्वागत है। आखिर उन्होंने 2019 के प्रयागराज के कुम्भ मेले में किन्नर अखाड़े को अपने साथ जोड़ा और मंच दिया। ईश्वर ने मनुष्य को मनुष्य बनाया तो भेदभाव क्यों? आज पूरे राष्ट्र को जरूरत है कि सनातन धर्मी की पहचान केवल सनातन धर्म से हो। ऐसे में भेदभाव को मिटाने के लिए उठाया गया कदम एकदम सही है।

स्वामी हरिचैतन्य ब्रह्मचारी

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रविंद्र पुरी भी ऐसे फैसले का स्वागत करते हैं। उनका कहना है कि संन्यास से पहले ही किसी भी व्यक्ति का क्षौर कर्म कराकर स्नान कराया जाता है। जाति जरूरी है कि संत समाज हर वर्ग को साथ लेकर चले। वहीं टीकरमाफी आश्रम के स्वामी हरि चैतन्य ब्रह्मचारी का कहना है कि जूना अखाड़ा जिस आधार पर यह कर रहा है, निश्चित ही स्वागत योग्य है। हमारे सनातन धर्म से पलायन का बड़ा कारण उपेक्षा था। जब ईश्वर ने सभी को एक जैसा बनाया है तो उपेक्षा क्यों?

चिकित्सक की डायरी

सूर्योदय से नवोदय तक

आजकल जब देश के किसी न किसी भाग से प्राय: हम ही चिकित्सक या उनसे जुड़े किसी न किसी संस्थान या प्रतिष्ठान पर जनता-जनार्दन का आक्रोश-समाचार सुनने को मिलता है उस समय मेरे लिए यह आत्मालोचन का गंभीर विषय है कि आखिर चिकित्सा सेवाएं और उनसे जुड़े हम लोगों से आतुर लोगों की क्या-क्या अपेक्षाएं हैं? क्या चिकित्सा कार्य हम लोगों के लिए महज जीवनयापन का साधन है? क्या यह सत्य नहीं है कि चिकित्सा कार्य अनेक लौकिक तथा परलौकिक प्रवृत्तियों को उत्कर्ष के शिखर पर ले जाने के लिए प्रेरणा का स्रोत सोपान है। हम जैसे-जैसे चिकित्सा वृत्ति की गहराइयों में उतरते जाते हैं त्यों-त्यों हमें रोज ऐसे अनेक मोती मिलते हैं जिनके प्रकाश और प्रसाद से हम अभिभूत होते जाते हैं। आज मैं अपने चिकित्सकीय जीवन में चिकित्सा सेवा के इन्हीं विविध पक्षों की चर्चा करना चाहूंगा।

डा. श्रीधर द्विवेदी
वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली

परदुखकातरता: प्रत्येक चिकित्सक का सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह अपने पास आए हर रोगी दुखी आतुर व्यक्ति के दुख का निवारण करने का गंभीरता से प्रयत्न करे जिसे हम परदुखकातरता कहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है-'परहित सरिस धर्म नहिं कोई, पर पीड़ा सम नहिं अधिमाई'। महामना मालवीय के जिस परिसर से हम सब चिकित्सक दीक्षित होकर निकले हैं उसका घोष वाक्य है- 'चिकित्सात् पुण्यतमं न किंचित' अर्थात् चिकित्सा कार्य से बढ़कर और कोई पुण्य नहीं है। यह जरूरी नहीं कि हमारे पास आए हर रोगी को हम रोगमुक्त कर सकें,पर उसे हम अपने वाणी, व्यवहार, हमदर्द भरे उपचार से कुछ न कुछ राहत तो दे ही सकते हैं।

शिक्षण और शोध का मणिकांचन संयोग : चिकित्सक के रूप हमें आजीवन शिक्षक बनने का स्वर्णिम अवसर मिलता है। जहां भी रहें गांव में शहर या महानगर, किसी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला स्तर के अस्पताल अथवा मेडिकल कॉलेज या किसी अन्य उच्च चिकित्सा संस्थान में अपने कनिष्ठ, तकनीकी सहयोगियों, रोगियों या उनके परिचारकों को रोग के विषय में, जांच की गूढ़ता, शल्य क्रिया की जटिलता के विषय में पढ़ने-पढ़ाने और शोध के अनंत शुभ अवसर मिलते हैं। कोविड काल इस बात की पुष्टि के लिए सबसे बड़ा उदाहरण है। जब कोविड शुरू हुआ था उस समय चिकित्सा जगत में शायद ही कोई इस भयानक रोग के विषय में विस्तार से जानता हो,परंतु दो वर्षों के अंदर पठन-पाठन, सेमिनार-वेबिनार की इसी शिक्षण प्रवृत्ति ने प्रायः सभी चिकित्सकों को समस्त देश में इस आपदा से निपटने में समर्थ बना दिया। शिक्षा के साथ-साथ शोध की उज्ज्वल परंपरा चिकित्सक के जीवन की सबसे बड़ी विरासत है। पूरा आयुर्वेद शास्त्र इसी शिक्षण और शोध की परंपरा पर निर्भर था जिसके बल पर महर्षि सुश्रुत डायबिटीज के विषय में ईसा से 5000 वर्ष पूर्व बता सके। जब भारतवर्ष में बहुत मेडिकल कालेज नहीं थे, उस समय भी मलेरिया, टीबी के कीटाणु, कालाबाजार से लड़ने वाली औषधि का आविष्कार इसी शोध परंपरा के बल पर किया जा सका। सांप्रतिक काल में हमारे सामने कई ऐसे ज्वलंत उदाहरण हैं, जहां एक ख्यातिनामा चिकित्सक के साथ-साथ लोग दिग्गज शोधकर्ता भी रहे। डाक्टर उड्डुपा, डाक्टर रामलिंगम स्वामी, डाक्टर पद्मावती, डाक्टर सुजॉय बी रॉय, विश्वविश्रुत डाक्टर सेठी, डॉक्टर तुली ऐसे कई नामचीन हस्तियां रही हैं,जो हमारे लिए इस दिशा में ज्योति स्तंभ का काम करते हैं। अर्जुन की हृदय रोगों में उपयोगिता विषयक मेरा शोध अंतर्राष्ट्रीय पर मान्य किया गया तथा जीवनशैली पर आधारित अन्य शोधपत्र इसलिए संभव हो सका,क्योंकि मैं चिकित्सा कार्य के साथ-साथ इन क्षेत्रों में निरंतर शोध में संलिप्त रहा। यह सब मेरे छात्र जीवन में गुरुओं की शिक्षा और निर्देशन का सुफल है। इसलिए मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूं कि चिकित्सा जीवन हमें उच्चकोटि के शोध के अजस्र अवसर प्रदान करता है।

बहुलतावादी संस्कृति को समझने का सुअवसर : अपने देश की बहुलता, बहुभाषा और बहुसंस्कृति को समझने का जितना सुअवसर हमें चिकित्सा जीवन में मिलता है वह संभवतः किसी अन्य पेशे में कम मिलता है। हमें हिन्दी ही नहीं वरन उसकी समस्त आंचलिक स्वरूप जैसे अवधी, भोजपुरी, ब्रज, मैथिल, हरियाणवी, उर्दू पंजाबी, बंगाली, कन्नड़, मलयालम, टूटी-फूटी तमिल के शब्द सुनने-बोलने, उनमें स्वागत करने का सौभाग्य मिलता है और उसी के साथ उस प्रदेश-समाज की संस्कृति के दर्शन भी। अपने देश के बहुभाषी व बहुसांस्कृतिक परिवेश को भली-भांति देखने का दुर्लभ अवसर मुझे इसी पेशे में मिला। यह अवसर प्रायः हर उस चिकित्सक को मिलता है,जो आसेतु हिमालय मां भारती की सेवा के लिए सहर्ष तैयार रहता है।

साहित्यिक वृत्ति को निखारने का सुअवसर : चिकित्सा काल के व्यस्त समय में भी बहुत से चिकित्सक चिकित्सा शास्त्र से अलग अपने रुचि के विषयों पर पढ़ते-लिखते है। अपनी भाषा में लेखन-काव्य प्रणयन चिकित्सा शास्त्र की पूर्व परंपरा रही है। आयुर्वेद की बृहतत्रयी की प्रमुख रचनाएं सब श्लोकबद्ध हैं। चिकित्सक जीवन में हमें ऐसे विविध मार्मिक हृदय स्पर्शी प्रसंगों, कथाओं और व्यक्तियों से संपर्क होता है, जो हमें प्रभावित ही नहीं करते वरन कुछ सिखाते भी है। कुछ कहकर जाते हैं। उन्हें पूरे समाज को बताना-समझाना हम चिकित्सकों का उत्तरदायित्व बनता है। इसके लिए हमने साहित्य सृजन की विधा का सहारा लेना पड़ता है। यह हमारे लिए प्रेय और श्रेय दोनों का कारण बन सकता है। साहित्य सृजन स्वांतः सुखाय प्रक्रिया भी सिद्ध हो सकती है,शर्तें वह सत्य,शिव और सुंदर पर सापेक्ष रचना हो। कम से कम मेरे जैसे चिकित्सक के लिए रचना धर्मिता आत्मावलोकन और आत्मसुख का प्रधान कारण सिद्ध हुई है। मैं इसी सृजनात्मक प्रवृत्ति के बल पर तीन विद्यापीठों- यूसीएमएस, दिल्ली भेषज अनुसंधान विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के लिए कुलगीत का प्रणयन कर सका। अनेक स्वास्थ्य सुभाषित,आलेख, कथानक और स्वास्थ्य विषयक पुस्तकें लिख सका। साहित्य के अतिरिक्त संगीत,नृत्य,खेल,बागवानी अथवा अन्य कोई शौक भी चिकित्सा सेवा के आयाम को असीमित ऊचाइयों तक पहुंचा सकते हैं।

स्वास्थ्य विषयक कुरीतियों को दूर करने का दुर्लभ सुअवसर

एक चिकित्सक के रूप में अपने रोगियों तक ही नहीं वरन पूरे परिवार को धूम्रपान, तंबाकू, गुटखा, पान मसाला, हुक्का, शराब, जंक-भोजन, खराब जीवन शैली के विषय में जागरूकता का मौका मिला। जैसे-जैसे इस विषय में सफलता और अनुभव बढ़ता गया इस अभियान को स्कूल स्वास्थ्य शिक्षा, टेलीमेडिसिन, संचार माध्यमों-फ़ेसबुक, ट्वीटर, दूरदर्शन, यूट्यूब आदि विविध सूत्रों से इस शिक्षा-जागरूकता को आगे बढ़ाया। इसमें मिली अभूतपूर्व सफलता का पूरा-पूरा श्रेय हमारी चिकित्सा भावना की उदात्त संकल्पना को जाता है। मेरे लिए यह अशेष संतोष और गर्व की बात है कि मैंने देश की तंबाकू विरोधी अभियान में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और आज भी अपने हर रोगी, उसके परिजन तथा अनेक ज्ञात-अज्ञात लोगों को इसको त्याग देने के लिए निमित्त बनता हूं। मेरे पास उन अनेक रोगियों की विशद श्रृंखला है जिन्होंने मेरे आग्रह पर धूम्रपान या तंबाकू का पूर्णतः त्याग कर दिया, जो इस कुटेव को पूरी तरह से छोड़ नहीं भी पाए उन्होंने इसका प्रयोग निश्चित रूप से कम कर दिया। यह भी कम संतोष की बात नहीं। यह सब चिकित्सा विज्ञान के अंतर्भूत सिद्धांतों के पालन तथा ईश्वर की अहैतुकी कृपया के फलस्वरूप संभव हो सका है।

योग-आयुर्वेद को समझने -परखने का सुअवसर

अच्छा यह संयोग है कि मेरी प्रारम्भिक चिकित्सा शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई जहां आयुर्वेद और योग को समझने का अनूठा सुअवसर मिला। उसी काल में अर्जुन छाल की हृदय रोगों में उपयोगिता पर शोध, विमर्श का अवसर मिला। योग की विधा से साक्षात्कार हुआ। इस दिशा में निरंतर शोध के नए आयाम खोले। इन सबका प्रतिफल यह हुआ कि मै इन विधाओं का विश्वासपूर्वक अपने चिकित्सकीय जीवन में कर सका जिसका लाभ मेरे असंख्य रोगियों को मिला है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि नव गठित एन एम सी इस विषय पर उदार और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाएगी और समग्र देश के चिकित्सा स्नातकों को आयुर्वेद -योग के विरासत का लाभ उठाने का सुअवसर देगी और उनके माध्यम से पूरे देश की जनता को ।

इतिहास, दर्शन, पुरातत्व तथा मानव जैविकी को समझने का अवसर

सच पूछिए तो पूरा का पूरा चिकित्सा शास्त्र इतिहास ,दर्शन और मानव मूल्यों पर टिका हुआ है। पढ़ते-पढ़ाते, निदान करते,उपचार करते और बाद में रोग के निराकरण-उन्मूलन हेतु हमें इतिहास का सहारा लेना ही पड़ता है।

ईश्वरीय शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव

चिकित्सा शास्त्र की सुनिश्चित लकीर से हटकर हम जब उसे गहरी आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की कोशिश करते हैं तो हमें उस परम शक्ति का साक्षात अनुभव होता है जिसकी कृपा से हमारा मरीज ठीक हो जाता है। इस विषय में महान चिकित्सक हिपोक्रेटीज महोदय ने कहा है -हम मरीज का उपचार करते हैं और ईश्वर उसको रोगमुक्त करते हैं। कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकांड फ्रांसीसी सर्जन पियरे महोदय ने व्यक्त किए हैं- मैं मरीज की मरहम-पट्टी करता हूं और परमात्मा उस घाव को पूज देते हैं। कोविड महाआपदा में ऐसे अनेक अनुभव हुए,जो भगवदकृपा का निरंतर स्मरण कराते रहें। कोई न कोई तो है जो हमसे यह सब करवा रहा है। उम्र के इस पड़ाव में भी हमारे अंदर वह ऊर्जा ,वह ऊष्मा और वह भाव प्रदान कर रहा है। अंदर से हमें ठेल रहा है- 'चरैवैति चरैवैति'। ईश्वरीय विधान में प्रबल आस्था रखने वाले मेरे जैसे अनेक चिकित्सक आज भी अपने जीवन की स्वर्णिम संध्या में अस्ताचल गामी गतिमान दिनकर की भांति पुन: किसी दूसरे जन्म में चिकित्सक के रूप में अपने अरुणोदय-नवोदय की प्रभु से प्रार्थना करते हैं। हमारे प्रकाशपुंज और मार्गदर्शक पूज्य महामना ने यही कामना की थी कि वह पुनर्जन्म में पुन: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की सेवा कर सकें। परम पिता परमात्मा हमारे इस प्रणत निवेदन को स्वीकार करेंगे या नहीं यह तो भविष्य के गर्भ में हैं,परंतु हम यह अवश्य कह सकते हैं कि चिकित्सा कार्य हमें परदुखकातरता, शिक्षण, शोध, जागरूकता प्रसारण, मार्गदर्शन, साहित्य-कला-संगीत में योगदान, दर्शन और अध्यात्म के अनेक सुवसर प्रदान करता है जिसके लिए हम चिकित्सक इस परदुखकातर विज्ञान के कोटिश: ऋणी हैं।

शब्द ज्ञान

दूरदर्शी और दूरदृष्टा

दूर की चीज देखने के लिए टेलीस्कोप या दूरबीन की तर्ज पर हिन्दी में दूरदर्शी शब्द है, पर इसका प्रयोग बतौर उपकरण कम और दूर तक देखने वाले, चिंतनशील व्यक्ति के लिए ज्यादा होता है। जाहिर है दूरदर्शी व्यक्ति का आशय दूरदृष्टा की तरह ही होता है। दूरबीन या टेलीस्कोप की तर्ज पर इसे पर्याय मानने का आधार अर्थसाम्य है। संस्कृत में दूरवीक्षण भी कहा जाता है।

बहरहाल बात दूरबीन की हो रही है, जो बुनियादी तौर पर फारसी लफ्ज है। 'दूर' संस्कृत में भी है और फारसी में भी। किसी स्थान या समय के संदर्भ में फासला या अंतर बताने के लिए प्रयुक्त यह अत्यंत लोकप्रिय शब्द है। इसे बोले बिना दिन पूरा नहीं होता। जब हम दूर-पास कहते हैं तो हिंदी का दूर बरत रहे होते हैं और जब दूरदर्शी के अर्थ में दूरंदेश बरतते हैं तो उसमें फारसी का दूर होता है। स्पष्टता, बोधगम्यता- 'बीन' के मूल में अवेस्ता का 'वएन' है जिसमें दृष्टिबोध, नजर या निगाह का भाव है। अवेस्ताई 'वएन' का संस्कृत समरूप है वेन्/वेण्। इसका एक अन्य संस्कृत रूपभेद 'वयुन' भी है जिसमें भी गतिवाची आशय हैं। इसमें चलना, सक्रियता, चैतन्य के साथ प्रज्ञा, विद्या, बुद्धि, ज्ञान, विवेक आदि आशय भी हैं। इसी तरह वेन् में ज्ञान, बोध, चिंतन जैसे आशयों के साथ जाना, चलना, जानना, विचार करना जैसे भाव भी हैं। 'दूर' यानी 'फासले से' और 'बीन' यानी 'दृष्टि, नजर, निगाह' को मिलाकर देखें तो दूरबीन में समझ, ज्ञान, दृष्य के संदर्भ में सरलता, स्पष्टता, बोधगम्यता जैसे आशय उभरते हैं, मगर प्रचलित आशय दूर का पास दिखाना हुआ।

अजित वडनेरकर
वरिष्ठ लेखक

दूरवीक्षण यंत्र फारसी में भी दूरबीन का मूल आशय दूरदर्शिता वाला ही था, जो बाद में उपकरण के अर्थ में रूढ़ हो गया। वेन्/वेण् का अवेस्ताई रूपांतर हुआ वएन। भारत-ईरानी भाषाओं में 'व' की तब्दीली 'ब' में होती है। इस तरह 'वएन' का रूपांतर फारसी में बीन हुआ। भारत-ईरानी परिवार की भाषाओं में डिस्टेंट, फार आदि आशय प्रकट करने के लिए 'दूर' शब्द का समान रूप से प्रयोग होता है। स्थान, काल आदि के बहुत कम या ज्यादा अंतर को व्यक्त करने के लिए दूर बरता जाता है। हिन्दी में दूरबीन के लिए दूरवीक्षण यंत्र जैसा अनुवाद बनाया गया है, मगर यह प्रचलन में नहीं है। दूरबीन ही ज्यादा चलता है।

दूरदर्शी और दूरदर्शक-हालांकि वैदिक 'वेन' जिसमें ज्ञान, दूरदर्शिता, अंतर्दृष्टि, देखना आदि भाव थे, हिन्दी में प्रचलित नहीं है। दूरवीक्षण में सिर्फ देखने की बात है, जबकि दूरबीन के स्थान पर 'दूरवेन' की कल्पना कर इसमें निहित दूरदर्शिता, ज्ञानबोध जैसे भावों को भी समझा जा सकता है। फारसी का दूरबीन भी सिर्फ यंत्र भर न होकर एक प्रयत्न है। प्रक्रिया है। अंततः साधना है। हां, हिन्दी में दूरदर्शी, दूरदर्शक जैसे शब्द भी दूरबीन के पर्याय हैं, मगर दूरबीन जितने लोकप्रिय नहीं हैं। इनके अंत में यंत्र शब्द का प्रयोग करने से 'दूरदर्शिता' वाली गहराई लुप्त हो जाती है। कुल मिलाकर दूरबीन अब सिर्फ उपकरण है।

देखना, छानना, बीनना-बीन से बीनाई बनता है जिसका अर्थ नेत्रज्योति है मसलन 'उसकी आंखों की बीनाई कमजोर है'। 'बीना' यानी देखने वाला। 'नाबीना' यानी दृष्टिहीन। अंतर्दृष्टि रखने वाला या अंतर्यामी को 'बीनादिल' कहते हैं। तफ्तीश, जांच-परख या इन्क्वायरी के अर्थ में हिन्दी में 'छानबीन' शब्द खूब प्रचलित है। यह भ्रम स्वाभाविक है कि छानबीन में जो बीन है, उसका फारसी के बीनाई शब्द से रिश्ता हो सकता है। वस्तुतः छानबीन समस्त पद है यानी सामासिक शब्द है। इसके पूर्वपद में छानना क्रिया है और उत्तरपद में बीनना क्रिया है। हिन्दी की बीनना को संस्कृत के विनयन से विकसित बताया गया है जिसका आशय है हटाना, दूर करना, सिखाना, शिक्षित करना आदि।

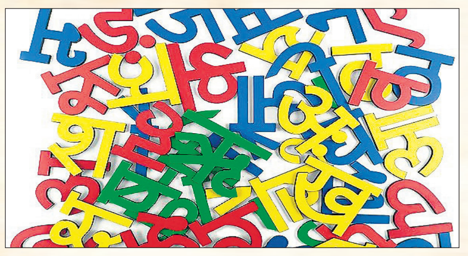

सीखने समझने की बात-गौर करें, शिक्षित करने, सिखाने में अज्ञान एवं बुरी वृत्तियों को हटाना भी शामिल है। विनयन में वही विनय है, जो शिक्षित व्यक्ति का गुण है। वैदिक क्रिया 'नी' में आगे ले जाने का भाव है। नेता, नेत्री, नेतृत्व जैसे शब्द इससे ही बनते हैं। 'नी' के साथ जब 'वि' उपसर्ग लगता है तो 'विनी' शब्द बनता है। इसमें नेतृत्व करना के साथ दूर ले जाना, हटाना, टालना, फेंकना, दूर करना, निकाल देना, छुटकारा पाना, निकाल देना जैसे भाव भी उभरते हैं। यही विनयन का आशय है। हिन्दी में विनयन का 'व' बदलकर 'ब' हो जाता है। इस तरह बिनयन होने हुए बीनना क्रिया बनती है जिसमें मूलतः सफाई, छंटाई, मोचन आदि का भाव है अर्थात् किसी समूह से अवांछित पदार्थों को हटाना, दूर करना, फेंकना, निकालना आदि। इस तरह छानबीन पूरी तरह हिन्दी का अपना शब्द है।

चलनी, छलनी, छन्ना- लगे हाथ छानबीन के पूर्वपद छान की बात भी कर ली जाए। हिन्दी में छानना भी आम बोलचाल और रोजमर्रा के कामकाज का शब्द है। इसका रिश्ता संस्कृत की गतिवाची चल् क्रिया से है। ध्यान दें, छानना क्रिया को संपन्न कराने वाले उपकरण को चलनी कहते हैं। अनेक स्थानों पर छलनी भी कहते हैं। मराठी में चाळणी है। हिन्दी में स, च, छ और झ में परिवर्तन होता है तो चल् से चलन, चालन, चलना, चलनी हुआ। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना चलना है और किसी पदार्थ की अशुद्धि को दूर करने के लिए उसे एक पात्र से दूसरे पात्र में किसी जाली से (चलाकर) गुजारना 'चालना' यानी छानना हुआ।

किन्हीं क्षेत्रों में 'ल' का बदलाव 'न' में हुआ। इस तरह चालना ही छानना हुआ। इसी प्रकार चलनी, छन्नी या छन्ना बन गई। ध्यान रहे 'ल' का बदलाव 'न' भी होता है और 'र' भी। 'चल्' का एक रूप 'चर्' भी है। चलन में भी गति है और चरण में भी। चरण ही चलना है यानी डग-पग है। चरण ही पैर हैं। विचरण यानी घूमना है। विचलन यानी अपने स्थान से हटना। अस्थिर रहना।

कविता

अवधी देवी

खोरिया ही गलियां बहारी मोरी
माई हो,
आवउ न अंगना हमार हो।
अंगना जो आवउ हमरे मोरी
माई हो,
नव दिन मनाई त्योहार हो।
नाही मोरी माई सोने की चौकी,
कठवा के चौकी तैयार हो।
नाहीं मोरी माई सोने के कलशा,
नाहीं मोर हिरवा के हार हो।
अड़हुल के फुलवा चुनि के लिए
कर लेहू सोलह सिंगार हो।
खोरिया ही गलियां बहारी ...
नाही मोरी माई मोरे दुधवा से
दहिया,
नाहीं ढोली लौंगा के पान हो।
रुखा ही सूखा माई भोगवा बनाए,
करि लेहू माई स्वीकार हो।
खोरिया ही गलियां...
नाहीं मोरे लहंगा ब सोनवा जड़ा,
नाहीं जड़ी चुनरी सितार हो।
आपन अंचरा माई तोहका
ओढ़ाईब,
राखउ न मान हमार हो।
खोरिया ही गलियां.....
नाही सोने चौकी के मोहे ललक,
नाही सोने कलशा से प्यार हो।
हमतऊ तेवई दौड़ि के आये,
देखी के श्रद्धा तोहार हो।
खोरिया ही गालियां...
दूधे पूते फलईं तेवई तोहरी
पतोहिया,
अमर होंहि ललना तोहार हो।
खोरिया ही गलियां बहारी मोरी
माई हो,
आवउ न अंगना हमार हो।

सरिता सिंह
लखनऊ

राम

अब त्यागि तंबू राम पुनि निज
गेह बापस आई हैं।
करुणा निधान सुजान-छवि
लखि भक्त मोद मनाई हैं।
बनिहै भवन अति भव्य पुनि
अवधेश सुत जनमें जहां।
नव कंज लोचन कंज मुख सुख
पुंज प्रभु सजिहैं तहां।।

आई घड़ी शुभ नींव पूजन कै,
मुदित सरजू बहैं।
पुरजन निरखि शोभा नगर कै,
पलक नहि झपक्यो चहैं।
सब बाल-वृद्ध विलोकि टी.वी.
मंह अकथ सुख पावहीं।
निज धाम बैठि गृहस्थ, ऋषि
मुनि राम के गुन गावहीं।।

ललकहिं सबहि केहि भांति
पहुंचहिं अवधपुर उत्सव जहां।
तीरथ नदी-नद प्रविसि जल
माटी मृदुल धाये तहां।
पूजन, भजन, मंत्रोच्चारण गूंज
चारहु दिसि बहै।
निज कुल-शिरोमणि-कीर्ति
लखि दिनमान अति प्रमुदित
अहै।

जहं जहं बसहिं प्रभु भक्त,
निज-निज देश मोद मनावहीं।
मंदिर बनै कब भव्य, दर्शन हेतु
भारत धावहीं।
कंबोडिया, बर्मा, सुमात्रा, है कहां
चर्चा नहीं?
मन मुदित देखि मनोज्ञ उत्सव
राममय है सब मही।।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

क्योंकि कुछ बचा है

खो गया है घर में घर
क्योंकि कुछ गुम है सबके भीतर
टीवी पर जो खबर है
कुछ गुम है उसमें
गुम है कुछ हर गारंटी में
गुम है कुछ हर जय जयकार में
गुम है कुछ हम सब के नाश्ते में
वह आदमी
जो मतदान केंद्र पर जा रहा है
लोकतंत्र के उत्सव में नहीं
एक युद्ध में जा रहा है जो उसका
नहीं है
गुम है कुछ हर मत में
जलवायु बदल रही है
पर अधिक तेजी से बदल रहा
है देश।
गुम है हर जगह कुछ न कुछ
आज वह हवा नहीं है
आज वह शांति नहीं है
मतदान केंद्र पर लोग खड़े हैं
कुछ न कुछ गुम है उनके भीतर
गाड़ियां दौड़ रही हैं
हिंदू ला रहे हैं हिंदू को
मुसलमान मुसलमान को
सभी जाति वाले ला रहे हैं
अपनी जाति के आदमी को
पेड़ की छाया के हैं अलग
अलग रंग
शीतलता गुम है पत्तों में
हालांकि फड़फड़ा रहे हैं वे
जहां हैं।
वह आदमी
अकेला आ रहा है मतदान
केंद्र में
कोई पहचान नहीं पा रहा है उसे
क्योंकि कुछ बचा है उसमें
वह एक नागरिक है
कहीं बहुत अकेला
वह एक सन्नाटा लिए आ रहा है
अपने खोए देश की चीख पर।
इसी तरह अकेले अकेले आ
रहे हैं
कई मनुष्य कई नागरिक
मतदान केंद्र पर
मुट्ठी में बचाए अपना वोटर कार्ड
बचाए अपनी आत्मा का पहचान
पत्र
वे संदेह से देखे जा रहे हैं
क्योंकि आ रहे हैं चुपचाप!

शंभुनाथ
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कोलकाता

कहानी

असमाप्त

भोर की पहली किरण ही फूटी होगी कि उसकी आंख खुल गई। कमरे में टीवी चल रहा था आवाज म्यूट थी, पर आरती की आवाज कानों में गूंजने लगी थी। फिर जल्दी ही रोज की तरह उसने देखा कि टीवी बंद हो गया। बिना आवाज और लाइट जलाए ड्राइंग रूम से कल का अखबार उठाकर वे बाथरूम में चले गए।

अब उसकी उठने की बारी थी, काम कुछ करने को होता नहीं, पर अब जब वे बाहर आएंगे तो चाय पिएंगे। बाकी घर की सुबह होने में अभी बहुत वक्त है। रिटायर होने पर भी उनकी दिनचर्या कुछ खास नहीं बदली थी, सुबह चाय के कप के साथ रेडियो पर भजन सुनते थे और जल्दी ही स्नान कर लेते थे। बस, दफ्तर के टाइम पर अखबार लेकर कुर्सी पर बैठ जाते थे और मुहल्ले के किसी दोस्त का इंतजार रहता था। लंच का वक्त वही था शाम की चाय थोड़ा पहले होने लगी थी। अब पेड़-पौधों से ज्यादा बात होती थी और होम्योपैथिक दवाएं ज्यादा बांटने लगे थे वह भी मुफ्त में। इनमें ही ऐसी कुछ चीजें थी, जो उसको कुछ खास पसंद न थीं, पर जिंदगी फकत पसंदीदा चीजों से तो नहीं चलती।

ब्रज राज नारायण सक्सेना
सेवानिवृत्त, सहायक महाप्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक

पहले जैसी व्यस्त नहीं रही थी जिंदगी, पर यूं कहो कि बहुत ज्यादा खाली वक्त था या खालीपन आ गया था, ऐसी भी बात न थी। जिंदा लोग मिलने आते थे, पर गैर जिंदा चीजें बहुत बोलती थीं। जैसे पुरानी किताबें, एलबम, तस्वीरें और चिठ्ठियां या फिर पुराने बंद पड़े बक्सों के तार-तार होते कपड़े और किसी काम के न रहे बर्तन। ये सब जबरन चिपके रहे उससे, साल दर साल। वह जानती थी कि ये सब उनको पसंद न थे, पर वही बात कि सब कुछ किसे पसंद होता है। फिर धीरे-धीरे कब बच्चों के प्यार में वह, हां सिर्फ वह ही, जिंदगी में एक बार फिर से रफ्तार देखने लगी थी। उसने इस बात में सच्चाई देखी कि यहां कुछ भी कम न था, पर वहां कुछ और भी बेहतर होगा और फिर अपना खून ही है। हम वहां नहीं जाएंगे तो और फिर कहां जाएंगे?

हर बार की तरह इस बार भी वे सहमत नहीं हुए, पेड़-पौधों, मरीजों, मुहल्लेदारों के बहाने बनाए पर असल में वे इस घर से कहीं और जाकर कभी खुश नहीं रहते थे। उसने भी ताना दिया कि ऐसे एकलखोर हो जाने से आगे और मुश्किलें हो जाएंगी। जाना तो हमें ही होगा, वो लोग तो नौकरियां छोड़कर हमारे पास आने से रहे। इस तरह बहुत कहने पर वे एक महीने के लिए चलने को तैयार हो गए।

अच्छा ही रहा यहां आकर, बच्चों की चिंता भी दूर हो गई और पूरा घर संभालने की हुज्जत से भी निजात मिल गई, पर जब कुछ भी अचानक नहीं होता तो धीरे-धीरे होता है। इस उम्र में बदलाव उससे भी धीरे-धीरे होता है और कई बार तो होता ही नहीं। उसने तो सबको खुद में शामिल कर लिया था, पर वह देख पा रही थी कि वे कोशिश तो बहुत करते थे, लेकिन अपना आप छोड़ नहीं पा रहे थे।

आज फिर उसने देखा कि आरती तो म्यूट में हो गई, पर भजन में जब आवाज का वक्त आया तो सबकी सुबह नहीं हो पाई थी सो उसे बंद करना पड़ा। फिर अखबार भी आज टेबिल पर मिला नहीं। नाश्ते की टेबिल पर भी थोड़ी हड़बड़ी रही और सब लोग अपने-अपने काम पर निकल गए। किसी को यह याद भी न आया कि आज पास की लाइब्रेरी का रास्ता दिखाना था ताकि दोपहर का वक्त निकल सके।

दोपहर को डायनिंग टेबिल पर जब खाना खाते हुए उसने उनको देखा तो आश्चर्य हुआ कि दाल में बिना घी डाले वे पूरा खाना खा गए और नमक भी न मांगा। यूं टेबिल पर सब था और घी पर भी कोई प्रतिबंध न था न कमी थी घर में पर बस 'नहीं लिया'। उसने याद दिलाया तो बोले "हो गया बस"।

फिर धीरे-धीरे उसे याद आने लगा कि कैसे उन्होंने भजन सुनना छोड़ दिया, पुराने गानों से मोह त्याग दिया, घर की बात शुरू कर के बीच में ही छोड़कर बाहर चले गए। वह समझने लगी थी कि जब वह सबको अपने आप में शामिल कर रही थी तब वे अपने स्वयं को अपने आप से निकालने में लगे थे और इसमें किसी और का रत्ती भर भी कुसूर नहीं था, न वे किसी को दोषी ही ठहराते थे, पर आज उसने मन ही मन कोई निर्णय कर लिया था और शाम को जब वह बगीचे में उनके पास बैठी थी तो उनका हाथ अपने हाथ में लेकर बोली "सुनो, हम अपने घर चलेंगे। बहुत दिन हो गए हैं, पेड़ पौधे सूखने लगे होंगे, तुम्हारे मरीज भी याद करते होंगे और मुहल्ले वालों की भी कोई खबर नहीं मिली है। मकान भी कुछ साफ-सफाई, पुताई मांगता है"।

उन्होंने पूछा "बच्चों से क्या कहोगी?" "जो तुमसे कहा है, वही"। उसने उनकी बांह को अपने कंधे पर महसूस किया और कुछ देर सब कुछ खामोश सा रहा फिर वे बोले "पर तुम्हें तो ये सारी बातें पसंद नहीं थीं?" "जैसे मुझे क्या पसंद है तुम सब जानते हो?" वापसी में दोनों खामोश थे, पर दोनों के मन में अपना घर था।

भूषण की मां

सर पर सफेद दुपट्टा और नीले रंग का प्रिंटेड सूट पहने आज भी उसकी एक हल्की सी झलक याद आती है। मोहल्ले में सभी उसे भूषण की मां कहकर बुलाते थे। वह हमेशा कलाई पर सफेद रंग का मलमल का थैला बांधे रहती थी। मुझे समझ नहीं आता था उस थैले में ऐसा क्या था, जो वह हमेशा उसे अपने पास रखती थी। मोहल्ले की कम पढ़ी लिखी औरतें उसे कमेटी वाली भी कहतीं थीं। एक दिन जब दादी से मैंने पूछा कि उसके थैले में क्या रहता है तो दादी ने कहा बहुत सारे पैसे।

ममता सोनी
राष्ट्रीय अध्यक्ष, कला भारती फाउंडेशन

उस दिन सुबह जब मैं सोकर उठी तो घर के पास थोड़ी दूरी पर खेतों में एक कुआं बना हुआ था। मैंने देखा कुएं के चारों तरफ बहुत से लोग घेरा बनाकर खड़े हैं। पता चला कि भूषण की मां ने अपने उस थैले के साथ कुंए में छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली है। किसी को भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया? बहुत से लोगों के पैसे डूब गए थे। जब भूषण की मां के मृत शरीर को निकाला गया तो वह थैला अभी भी हाथ पर बंधा हुआ था, परंतु उसमें पैसे नहीं थे। कुछ लोगों का कहना था कि शायद उसे इस धंधे में किसी सदस्य ने धोखा दिया है जिस कारण उसकी आर्थिक हानि उठानी पड़ी और वह यह सहन नहीं कर पाई, लेकिन कुछ लोगों का कहना यह भी था कि उसने पैसे अपने किसी कार्य में लगा दिए और वह इन्हें लौटा नहीं पाई।

दोस्तों लालच एक ऐसी चीज है जिसका कोई अंत नहीं है। इसका इतना भी बढ़ना ठीक नहीं है कि इंसान को इसकी कीमत अपनी जान से चुकानी पड़े। ईमानदारी से जिया जीवन अनमोल है जिसकी कीमत पैसों से कहीं अधिक है।

समीक्षा

नाक का सवाल, मचा बवाल

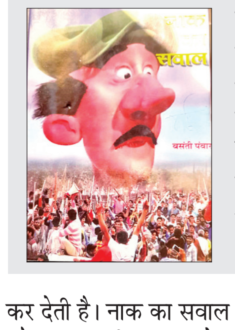

पुस्तक – नाक का सवाल
रचनाकार – बसंती पंवार
प्रकाशक – साहित्य सागर प्रकाशन जयपुर।
मूल्य– रु. 225
पृष्ठ संख्या – 144
समीक्षक– रमेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व प्रधानाचार्य) नैनीताल

व्यंग्य स्वतंत्र विधा के रूप में हिन्दी साहित्य में समादृत है। वाच्यार्थ से भिन्न कथ्य व्यंग्य होता है। वचन वक्रता इसका प्राणतत्व है। शब्दों की चाशनी में डुबाकर विसंगतियों पर प्रहार करना इसका कारगर हथियार है। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य अपनी पुरानी केंचुल उतारकर नया कलेवर धारण कर रहा है। 'नाक का सवाल' उसकी बानगी पेश करता है। हरिशंकर परसाई, ज्ञान चतुर्वेदी, गोपाल चतुर्वेदी के बाद बसंती पंवार इस श्रृंखला की अगली कड़ी हैं। अब तक उनके दो उपन्यास, दो काव्य संग्रह, दो बाल संग्रह, एक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। नाक का सवाल प्रथम व्यंग्य संग्रह है। इसमें कुल 43 व्यंग्य विविध विषयों का पड़ताल कर रहे हैं।

व्यंग्यकार समाज में व्याप्त-भाई-भतीजावाद, राजनीतिक भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यों का पतन, मानवीय मूल्यों में गिरावट, सरकारी तंत्र की विद्रूपता तथा आदर्शों और सिद्धांतों को ताक पर रखकर स्वार्थ साधने की मानसिकता जैसी प्रवृत्तियों पर कुलिश प्रहार करता है। कथ्य को ऐसे मोड़ पर लाकर छोड़ देता है, जहां पाठक सोचने के लिए विवश हो जाता है। इसकी पैनी धार सीधे मन-मानस पर प्रहार करती है। सरकार की द्रुत विलंबित व्यवस्था हो या अराजकता की पराकाष्ठा व्यंग्यकार संघातिक चोट करता है। भ्रष्टाचार को शिष्टाचार का आवरण पहनाना सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करना है। सुडौल नासिका आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होती है, किंतु सूर्पणखा की नाक सौन्दर्य को अप्रतिष्ठित कर देती है। नाक का सवाल इस संग्रह की अंतिम कड़ी है और शायद यही इस कृति के नामकरण की आधार शिला है। एक कुशल व्यंग्यकार शब्दों का नश्तर चुभोकर विद्रुपताओं का अन्त्य परीक्षण करता है। लेखिका ने सामाजिक परिवेश, भोगा हुआ यथार्थ, परंपरा का विचलन, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर खुलकर संवाद किया है। वह केवल सवाल ही नहीं उठाती, बल्कि समाधान की राह भी प्रशस्त करती हैं। पानी, सिपाही, कुर्सी, दाल गलेगी, भ्रष्टाचार और ईमानदारी, निंदा-आलोचना, योगी और भोगी, उल्लू का पट्ठा, बाप बड़ा न भैया, भाषण, क्या हम जिंदा हैं, नेताशयनी एकादशी, तेरी चाहत में, गाय और घास, उपाधि, हमें तलाक चाहिए जैसे शीर्षकों से सजे हुए व्यंग्य मर्म को भेदने में सक्षम हैं। लोकप्रिय मुहावरे, लोकोक्तियां, कविताएं और फिल्मी गीत संकलन को रोचक व पठनीय बनाते हैं। इस अप्रतिम कृति के लिए लेखिका को साधुवाद।

किस्सा

एयरपोर्ट पर जीवन चक्र

कोलकाता इस बार दो दिन ही रहे। जाने के पहले कई मित्रों से मिलने का प्लान बनाया था, लेकिन मिलना नहीं हो पाया। हवाई अड्डे पर बाहर ही कम्प्यूटर पर बोर्डिंग टिकट प्रिंट करने की कोशिश की। नहीं बना। हर बार बताया- 'पीएनआर नंबर मैच नहीं कर रहा है।' अपने कम्प्यूटर को गलत मानकर अंदर आ गए। सिक्योरिटी वाले ने टिकट और परिचय पत्र देखकर अंदर आने दिया।

अनूप शुक्ल
कानपुर

काउंटर पर बोर्डिंग टिकट बनवाने के लिए अपनी बुकिंग दिखाई तो बताया गया कि ये तो लखनऊ से कोलकता आने का टिकट है। जाने का दिखाइए। हमने बुकिंग टिकट पलट के दिखाया उसमें भी लखनऊ से कोलकता का ही प्रिंट था। हमने फिर मोबाइल में टिकट दिखाया। काउंटर कन्या ने बोर्डिंग पास बना दिया। मतलब बाहर कम्प्यूटर जी सही कह रहे थे कि जो पीएनआर नंबर हम भर रहे थे वह ठीक नहीं था। दूसरी तरफ सुरक्षा वाले भाईसाहब ने बिना हमारा टिकट ठीक से देखे हमको आने दिया। हमने कम्प्यूटर जी से दूर से माफी मांगी कि हमने उनको गलत समझा। अनजाने में हम तमाम लोगों को गलत समझते रहते हैं। अक्सर पता भी नहीं चलता कि हम गलत हैं। इसी भ्रम में लोग जिंदगी भी गुजार देते हैं। सुरक्षा वाले के लिए क्या कहें जिसने हमारा टिकट ठीक से देखे बिना अंदर आने दिया? बोर्डिंग पास बनवाने के बाद उड़ान का इंतजार करते हुए एक संन्यासी जी से मुलाकात हुई। उनके सर पर रंगबिरंगा मुकुट सा था। मुकुट के चलते वे लोगों के आकर्षण का केंद्र बने थे। पास बैठे थे लिहाजा बातचीत हुई।

पता चला संन्यासी जी इंग्लैंड से थे। संन्यास ले लिए हैं। इस्कान समुदाय से जुड़े हैं। बातचीत के दौरान गीता के कई श्लोक सुना डाले। कुछ हमने भी 'मिसरा उठाने वाले अंदाज' में साथ में दोहराए। उनके साथ एक युवा संन्यासी भी था। पता चला वह कोरिया का रहने वाला है। अभी गृहस्थ है, लेकिन इस्कान से जुड़ा है। संन्यासी जी का मुकुट रंगबिरंगा था। हमने तारीफ की तो मुकुट उतारकर दिखाया। मुकुट में मौजूद एक बटन दबाया तो मुकुट में लगे बल्ब जलने-बुझने लगे। मुकुट में मौजूद आकृतियों के सहारे हमको जीवन-मरण का चक्र अंग्रेजी में समझाया। पैदाइश, बचपन, जवानी, बुढ़ापा से होते हुए आखिर तक का सीन। हमने तारीफ की तो दुबारा दिखाया जीवन चक्र। तारीफ को उन्होंने 'मुकर्रर' की तरह लिया होगा। हमने दुबारा तारीफ नहीं की। उन्होंने बटन बंद कर दिया। कुछ देर तक बात करने के बाद अपन की फ्लाइट की बोर्डिंग शुरु हो गई। अपन जहाज में बैठकर घर की तरफ चल दिए।

व्यंग्य

ईवीएम का वार्तालाप

चुनाव से पहले और चुनाव के बाद हजारों उठा पटक, लटके-झटके और भांति-भांति के बोल बच्चन सुनने के बाद भी यदि कोई चीज याद रह जाती है तो वह ईवीएम ही है। यदि कोई रोना रह जाता है तो वह ईवीएम ही है। ईवीएम को तुलसी की माला बना दिया गया है। पक्ष-विपक्ष दोनों उसके नाम की माला जपता रहता है। हारने और जीतने वाला दोनों कैंडिडेट तो चुनाव तक ही लाइमलाइट में रहता हैं, लेकिन एक ईवीएम ही है। महीना दिन पहले से ही हाईलाइट हो जाता है और चुनाव के बाद भी खूब सुर्खी में बना रहता है। हर कोई सोचता होगा नाम मिले तो ईवीएम जैसा मिले। बदनामी भी अपरंपार और नेकनामी भी अपरंपार हर ईवीएम के किस्मत में है। कोई माला जपे कुछ पार उतरने के लिए भी और डूबने के बाद इज्जत बचाने के लिए भी। ईवीएम, ईवीएम न होकर नेताओं के दरवाजे का पर्दा हो चुकी है, जो उनकी इज्जत छुपाकर रखती है। वरना अब तक कितने माननीय की इज्जत तार-तार और चिंदी-चिंदी रोड पर पड़ी हुई दिखाई देती और उनके विरोधी उनके सामने उनके झंडे बनाकर उन्हें चिढ़ाते रहते। सब कुछ ईवीएम के माथे मढ़कर अपनी लाज को बचा ले जाते हैं।

रेखा शाह
बलिया

चुनाव से निपटने के बाद स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रखी हुई बहुत सारी ईवीएम एक दूसरे से फुर्सत से बतिया रही थीं। कोई छेड़ रही थी कोई शर्मा रही थीं। सब अपने-अपने क्षेत्र के माननीय के कच्चे चिट्ठे एक दूसरे के सामने खोल रही थी। ईवीएम आश्चर्य में पड़ रही थी। अरे माननीय तो इतनी बड़ी-बड़ी बातें किए थे और हकीकत में उनकी औकात दो पैसे की है। एकदम उत्सव जैसा माहौल था। एक ने पूछा-"बहन यह बताओ तुम्हारे यहां के मतदाता कैसे थे? मतदान कैसा रहा?" मैं तो जहां गई थी वहां के मतदाता घोर काहिल थे। इतना जरूरी काम उसको भी करने में उन लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं थी। मात्र पचास फीसदी ही मतदान करने के लिए घर से निकले और बाकी सब लगे रहे सोशल मीडिया पर चुनाव पर ज्ञान देने में"।

दूसरी ईवीएम बोली-"हां बहन मेरे यहां के मतदाता तो और भी निकम्मे थे। मात्र चालीस फीसदी ही वोट देने के लिए घर से निकल पाए, जो सजग थे वह तो वोट के लिए निकले, लेकिन उन निकम्मों का क्या किया जाए जिनके लिए चुनाव कोई मायने ही नहीं रखता और लेकिन उन सबकी अरुचि के कारण अगर गलत कैंडिडेट जीतता है और कुछ उनके क्षेत्र में गलत होता है तब छाती पीटकर जरूर रोते हैं"। सारी ईवीएम में एक दूसरे से बतियाने और एक दूसरे क्षेत्र के क्षेत्र का हाल-चाल पूछने में व्यस्त थीं। आखिर क्या करें मिलना भी तो ज्यादा-ज्यादा दिन पर होता है। वहीं पर दूर एक कोने में एक ईवीएम घुटनों में सर डालें सिसकिया भर रही थी। उसके रोने से सारी सकपका गईं। सबने एक स्वर में पूछा "क्या हुआ बहन तुम क्यों रो रही हो? मात्र चुनाव के समय ही तो हम लोग बाहर निकलते हैं। एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, एक-दूसरे से दुख-सुख सांझा करते हैं। जनता को उनका मनचाहा उम्मीदवार जिताने में साधन बनते हैं और ऐसे शुभ घड़ी में तुम क्यों रो रही हो?"। रो रही ईवीएम ने एक बार सिर उठाकर सबको देखा और रोते हुए ही बोली-"बहनों क्या तुम लोगों को अंदाजा है कि चुनावी रिजल्ट के बाद क्या होगा, नहीं तुम लोगों को कोई अंदाजा नहीं है। इसीलिए इतनी निश्चित और सहज और खुश होकर बात कर रही हो, लेकिन मैं चुनावी रिजल्ट के बाद की स्थिति को सोचकर रो रही हूं। चुनाव के बाद जो जीतेगा वह हमारी जय जयकार करेगा और जो हार जाएगा वह अपने कर्मों का ठीकरा हमारे सर पर तोड़कर हमारी सुचिता पर उंगलियां उठाएगा। जबकि हम लोग थोड़े न कहने जाते हैं कि आप अलाना और फलाना उम्मीदवार को चुनिए। हम लोग तो इतने असहाय हैं कि अपने आप तो अपने में कुछ बदलाव भी नहीं कर पाते हैं, लेकिन फिर भी सारी गलियां हम लोगों के ही हिस्से में आती है"।

सारी ईवीएम के बीच में से एक बुढ़ी और समझदार ईवीएम निकलकर बाहर आई और रोती हुई ईवीएम के आंसू पोंछकर बोली-बेटी रो मत मैं तो कितने साल से इन घाघ, दलबदलु नेताओं की बातें सुनते आ रही हूं, जब जीतते हैं तो खुश होते हैं और हारते हैं तो गाली देते हैं। तुम उन सजग मतदाताओं के बारे में सोचो न की इन घाघ नेताओं के बारे में सोचकर अपने को दुखी करो"। रोने वाली ईवीएम लगता था। अपनी स्थिति के बारे में सही-सही समझ तो गई है, लेकिन फिर भी उसका दिल स्वीकार नहीं कर रहा है। अपने देश के जनता के तरह ही।

जापान का किंकाकू-जी और ऐतिहासिक शहर नारा

आधुनिक शहरों की तरह हिरोशिमा भी आज 12 लाख की आबादी के साथ फिर से हंसता मुस्कुराता खड़ा है। हम हिरोशिमा से निकलकर ओशाका पहुंचे और फिर क्योटो। क्योटो कमाल के मंदिरों का शहर है जिसमें ज्यादातर बौद्ध मत से संबंधित हैं। सबसे पहले हम क्योटो रेलवे स्टेशन से ही बस से किंकाकू जी मंदिर की ओर चले। किंकाकू जी (शाब्दिक अर्थ : स्वर्ण मंदिर) क्योटो का बहुत ही प्रतिष्ठित जैन बौद्ध मंदिर है। मंदिर के अंदर पहुंचकर लगा कि जैसा बौद्ध मंदिर होना चाहिए, वैसा ही है।

यात्रा वृत्तांत

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

हरी भरी पहाड़ी के किनारे का ऐसा सुंदर बौद्ध मंदिर शायद पहले नहीं देखा था। लद्दाख, लाहुल स्पीती के मंदिर भी सुंदर हैं, उनकी अपनी वास्तुकला है, पर हरे भरे परिसर जैसी रमणीयता वहां नहीं मिलती। हां यहां पर्यटकों की भारी भीड़ थी,जो इसकी शांति को भंग कर रही थी,पर भीड़ खत्म होते ही यह मंदिर जन्नत बन जाता होगा, ऐसा मेरा समझना है। सुनहरे गुंबद वाला किंकाकू-जी मंदिर क्योको-ची तलाब के ठीक सामने बना है। इसके गुंबद और मंदिर की तालाब के पानी में पड़ने वाली छाया यहां के नजारे को और भी खूबसूरत बनाती है। ये बौद्ध मंदिर यहां की पारंपरिक कुलीन संस्कृति और नई समुराई संस्कृति का मिश्रण है। किंकाकू-जी मंदिर को गोल्डन पैवेलियन के नाम से भी जाना जाता है। इसकी दो मंजिलें पूरी तरह से शुद्ध सोने की पतली परतों से ढकी हुई हैं। मंदिर एक सुंदर शास्त्रीय जैन उद्यान के भीतर स्थित है। किंकाकू-जी की विस्तृत वास्तुकला में तीन अलग-अलग स्थापत्य शैलियों-शिंदेन, समुराई और जेन को शामिल किया गया है। इसे मुरोमाची शोगुनेट के तीसरे शोगुन,आशिकागा योशिमित्सु ने 1398 ईसवी में बनवाया था। इसमें 14 वीं और 15 वीं सदी की जापानी शैली है। बौद्ध धर्म में सोना आध्यात्मिक शुद्धता का प्रतिनिधित्व करता है। किंकाकु-जी नाम,जिसे अब मंदिर आमतौर पर संदर्भित करता है, का सीधा अनुवाद "स्वर्ण मंडप का मंदिर" है। किंकाकू-जी विस्तृत उद्यान मूल रूप से जापानी और चीनी साहित्य से प्रसिद्ध विवरणों को प्रतिबिंबित करता है।

किंकाकू-जी जापानी इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे 1994 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बनाया गया था। इस मंदिर का भ्रमण एक उपलब्धि की तरह था।

जैन बौद्ध स्कूल ध्यान का स्कूल है, निर्विकार होने का स्कूल है। कुछ जैन भिक्षु तो इतने निर्विचार होते हैं कि वे अपनी मदद से ही बार-बार पूछते रहते हैं कि तुम कौन? जैन अपने केन्द्र में गहन मौन और आनंद है। इस मंदिर की प्राकृतिक छटा में तो वैसे ही ध्यानी बहुत जल्दी ही निर्विकार हो जाएगा।

ऐतिहासिक शहर नारा

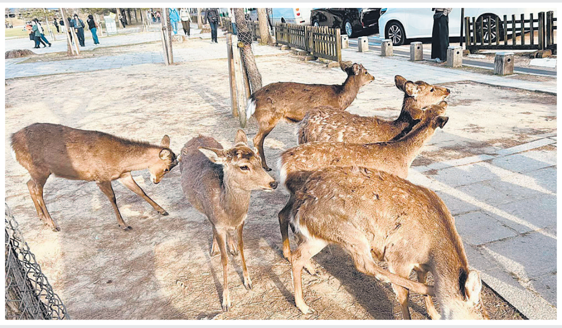

ऐतिहासिक शहर नारा को आठवीं शताब्दी में तत्कालीन सम्राट द्वारा जापान की राजधानी बनाई गई थी। उस काल को हम जापान में बौद्ध धर्म का काल स्वर्ण काल भी कह सकते थे। कोरिया के रास्ते आया बुद्ध धर्म उस समय राष्ट्रीय धर्म बन चुका था।

आज नारा, क्योटो के दृष्टिकोण से छोटा शहर है, पर है प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। एक विकसित देश के छोटे शहर की ठंडी प्रदूषण रहित हवाएं मुझे बहुत आकर्षित करती है। ये अलग दुनिया में ले जाती है। ऐसी ही ठंडी हवाएं मुझे आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड में मिलती है।

खैर नारा का मुख्य आकर्षण था हजारों हिरनों से भरे पार्क के बीच का टोडाई-जी बौद्ध मंदिर। टोडाई-जी (ग्रेट ईस्टर्न टेम्पल) अपने ग्रेट बुद्ध हॉल के लिए प्रसिद्ध है, जो दुनिया की सबसे बड़ी लकड़ी की इमारतों में से एक है। इस प्रभावशाली इमारत में बुद्ध वैरोकाना की 15 मीटर ऊंची कास्य प्रतिमा है।

यहां की बुद्ध प्रतिमा सम्राट शोमू के आदेश के तहत पूरे जापान में बौद्ध धर्म फैलाने के लिए बनाई गई थी। इसका निर्माण 728 में शिगाराकी (शिगा प्रांत) में शुरू हुआ था। माना जाता है कि इससे देश को उन कई आपदाओं से बचाने में मदद मिली, जिन्होंने तब देश को हिलाकर रख दिया था। वर्ष 751 ई. में नारा में यह मूर्ति बनकर तैयार हुई। यह प्रतिमा महायान स्कूल के पांच ध्यानी बुद्धों में से एक वैरोचना आदि बुद्ध की है। संस्कृत में वैरोचना नाम का अर्थ है "प्रकाश का अवतार"। मंदिर के केंद्र में विशाल मुख्य हॉल है जिसे दाईबुत्सुडेन (ग्रेट बुद्ध हॉल) भी कहा जाता था, जहां आज विशाल कांस्य बुद्ध प्रतिमा रखी गई है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जापानी भिक्षु ग्योकी ने दक्षिण भारतीय भिक्षु बोधिसेना, जो चीन होते हुए जापान आए थे, की प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें नारा लाकर सम्राट के सामने पेश किया। उनका बहुत सम्मान किया गया और उन्हें वहीं पास के डायन-जी नामक मंदिर में ठहराया गया। भिक्षु बोधिसेना (बोडाइसन्ना-704-760) चीनी हुआयन बौद्ध स्कूल से प्रभावित होकर आए थे और नारा पहुंच कर उन्होंने यहां जापान में भी चीनी हुआयन बौद्ध स्कूल की स्थापना की जिसे जापानी नाम केगॉन बौद्ध स्कूल मिला। 752 ई में, सम्राट शोमुआ ने बोधिसेना को टोडाई-जी की नव निर्मित बुद्ध वैरोकाना की विशाल कांस्य प्रतिमा के लिए नेत्र-उद्घाटन समारोह करने के लिए कहा। टोडाई-जी के आंखों की पेंटिंग बोधिसेना द्वारा की गई थी। यह मंदिर भी केगॉन बौद्ध स्कूल का ही है। बोधिसेना ने अपना शेष जीवन अपने मंदिर दाइआन-जी में ही बिताया जहां 25 फरवरी 760 ई. को दाइआन-जी मंदिर में उनकी मृत्यु हो गई और पास ही रयूजुसेन पर्वत पर उन्हें दफनाया गया।

706 ईसवी में सम्राट शोमू ने नारा को अपनी राजधानी बनाया था। नारा काल (710-794) के बाद भी जापान में बौद्ध धर्म के कई अन्य महत्वपूर्ण स्कूल उभरे जिनमें तेंदई, शिंगन, जोदो, जैन और निचरेन प्रमुख हैं। नारा काल के अंत में जब राजधानी फिर से क्योटो में स्थानांतरित हुई, तो नारा का महत्व कम हो गया। आज क्योटो ही जापान की सांस्कृतिक राजधानी है।

टोडाई-जी बौद्ध मंदिर परिसर के चारों ओर हरे-भरे और सुंदर बगीचा है, जहां हजारों हिरण (नारा का प्रतीक) चरते हैं। लोग उन्हें कुछ खिलाते हैं तो वह अभिवादन करते हैं, नाचते है। यह एक बहुत ही कमाल का एहसास है, शानदार अनुभव है। नारा का भारतीय संबंध देखकर बहुत सुखद एहसास भी हुआ।

किंकाकू जी मंदिर से हम सब बस से क्योटो बोटैनिकल गार्डेन गए,जो कि कामो नदी के किनारे बना है। नदी के दूसरे किनारे पर क्योटो यूनिवर्सिटी है। यहां धूप और हवाओं में ठंडक थी। करीब-करीब सभी यहां ठंड के बचने के लिए अप्रैल में भी जैकेट पहने लगे थे। बोटैनिकल गार्डेन से हमने सब वे की सवारी ली। सब वे मतलब जमीन के नीचे की दुनिया,यात्रियों की अलग दुनिया। सब वे जैसे दिल्ली की मेट्रो पर पूरी तरह जमीन के अंदर। पर लगता है क्योटो की ज्यादातर जनसंख्या ट्रेन और सब वे से ही यात्रा करती है। प्राइवेट वाहनों का प्रयोग बहुत कम है।

हम सब शिजो स्टेशन पर उतरे। क्योटो की सुंदरतम मार्केट में खूब टहले। दाई मारो माल भी टहला गया। दाई मारो क्योटो के (ताकाशिमाया की तरह) सबसे बड़े और सबसे शानदार डिपार्टमेंट स्टोर में से एक हैं जिसमें कुलीन अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों से लेकर जापान के सबसे बेहतरीन फूड फ्लोर तक सब कुछ है। दाई मारो में आयातित ब्रांडों का एक विशाल चयन, त्रुटिहीन सेवा और एक फूड फ्लोर है। दाई मारो अच्छी सेवा पर गर्व करता है। मैंने भी वहां के फल के नाम पर केले और कटे अनन्नास खरीदे। वहीं से पास की निशिकी लेन/मार्केट भी टहले। इसे खाने की गली भी कह सकते हैं। लखनऊ की अमीनाबाद जैसी भीड़ पर पूरी तरह अनुशासित। हर तरह का समुद्री फूड पक रहा था। मछलियों/सी फूड की महक जरूर आ रही थी,पर मछलियों के शौकीन जापानियों के लिए यह सुगंध होगी। वे उन्हें खूब स्वाद लेकर खा रहे थे। इस पर शोध होना चाहिए कि उनके तकनीकी ज्ञान/बुद्धि में मछली का क्या कोई योगदान है?

सुगम मीनोपॉज के लिए करें जीवनशैली में परिवर्तन

डॉ. अर्पिता सी.राज
एमडी आयुर्वेद, प्रयागराज

महिलाओं के संपूर्ण जीवन काल में हार्मोन परिवर्तन के कारण प्यूबर्टी, प्रेगनेंसी तथा मीनोपॉज जैसे परिवर्तनों की श्रृंखला एक अभिन्न अंग है जिसका प्रभाव शरीर के साथ-साथ मानसिक अवस्था पर भी पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार मीनोपॉज चालीस के ऊपर मध्यवय की अवस्था का वह पड़ाव है जिसमें हार्मोन की कमी के कारण मासिक धर्म बंद हो जाता है तथा रिप्रोडक्टिव फेस समाप्त हो जाता है। स्टेटिस्टिक्स का आकलन करें तो इंडियन मीनोपॉजल सोसाइटी के अनुसार भारतवर्ष में मीनोपॉज की औसत उम्र 47 .5 वर्ष है। देश के विभिन्न भागों में यह वातावरण परिवर्तन तथा परिवेश के अनुसार 42 से 50 वर्ष के मध्य होती है। प्राकृतिक कारणों के अतिरिक्त मीनोपॉज का कोई भी सर्जिकल कारण जैसे हिस्ट्रिक्टोमी, कीमोथेरेपी, रेडिएशन, ऑटोइम्यूनडिजीज या जेनेटिकली भी हो सकता हैं। प्री-मीनोपॉज अवस्था भी अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा संवेदनशील है।

मीनोपॉज के दौर से गुजरने वाली न सिर्फ महिला,बल्कि परिवार के अन्य सदस्य भी उसमें होने वाले परिवर्तनों को महसूस करते हैं। सामान्य से हटकर व्यवहार का कारण संयुक्त रुप से लक्षणों का एक समूह जिसे मीनोपॉजसिंड्रोम कहते हैं। मीनोपॉज के मुख्य लक्षण जैसे हॉटफ्लैशेस, चिड़चिड़ापन, नाइटस्वेटिंग, घबराहट होना, चक्कर, थकान, जोड़ों में दर्द, उलझन, बेचैनी कब्ज, जी मिचलाना आदि रहते हैं।

शारीरिक परिवर्तनों में ड्राईस्किन के साथ-साथ रिंकल्स पड़ना,ओबेसिटी अर्थात् अचानक वजन बढ़ना, त्वचा एवं बालों का रूखापन, रिंकल्स, यूटीआई अर्थात् यूरिनरी ट्रैक्ट इनफेक्शन अनकंट्रोल्ड ब्लड अर्थात् बार-बार यूरिन की अनुभूति होना आदि लक्षण कहीं न कहीं सामान्य जीवनशैली को अस्त-व्यस्त कर के रख देते हैं। शारीरिक लक्षणों के अतिरिक्त मन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव मानसिक लक्षणों को जन्म देते हैं जैसे मूडस्विंग्स अर्थात् कभी भावुकता और कभी उत्तेजना इसको महिला के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्य भी महसूस करते हैं। इन क्षणों में महिला को अपने जीवनसाथी तथा पारिवारिक सदस्यों द्वारा मानसिक संबल तथा संवेदना की अत्यंत आवश्यकता होती है,परंतु भारतवर्ष में संकोचवश न तो महिलाएं अपनी अंतरंग भावनाएं अभिव्यक्त कर पाती हैं न ही परिवार के सदस्य उनके प्रति इतने सजग होते हैं जिसकी परिणति इमोशनल डिस्ट्रेस के रूप में होती है। सेक्स ड्राइव में कमी के कारण दांपत्य जीवन भी प्रभावित होता है। भारतवर्ष में मीनोपॉज पर बात करने के लिए उचित प्लेटफार्म या फोरम की हमेशा से कमी है,जबकि साइकोलॉजिकल काउंसलिंग, भावनात्मक संबल,महिलाओं को असमंजस तथा अव्यवस्थित मानसिक दौर से निकालने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इस पर चर्चा और डॉक्टर के उचित सलाह तथा जीवनशैली में परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता है। प्रीमोनोपॉज अवस्था से ही आयुर्वेद के अनुसार जीवनशैली तथा खानपान में परिवर्तन हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी द्वारा होने वाले साइड इफेक्ट जैसे कैंसर,कार्डियो वैस्कुलर डिजीज,से बचाव में सहायक है। आयुर्वेद के अनुसार आहार-विहार, रसायन एवं पंचकर्म चिकित्सा,योगासन, मेडिटेशन तथा फाइटो एस्ट्रोजन मेडिसिनल वैल्यू की शतावरी, अश्वगंधा आदि का प्रयोग एक बेहतर विकल्प हैं।

'प्रीवेंशन इस बेटर देन क्योर' का अनुपालन करते हुए ओस्टियोपोरोसिस जैसी समस्याओं से बचाव के लिए कैल्शियम युक्त डाइट दूध, दही का संतुलित मात्रा में प्रयोग बढ़ा देना समझदारी का काम है। मीनोपॉज अवस्था में 'विटामिन डी' की भी आवश्यकता होती है। प्राकृतिक रूप से प्रातः कालीन सूर्य की किरणें बोनडेंसिटी में कमी के कारण होने वाले ओस्टियो पोरोसिस को रोकता है। चालीस की अवस्था के बाद ओस्टियो आर्थराइटिस जिसमें सायनो वियल फ्लुएड कम हो जाता है तथा मीनोपॉज के कारण होने वाले जोड़ों के दर्द व सुचारू संचालन के लिए हर्बल तथा मेडिकेटेड ऑयल से स्नेहन तथा फॉर्मेंटेशन (मसाज) से बहुत आराम मिलता है। मीनोपॉज रेटिंग स्केल एमआरएस के आंकड़ों के अनुसार 75 प्रतिशत लक्षण हॉटफ्लैशस के पाए जाते हैं। आहार में परिवर्तन जीवनशैली परिवर्तन का अभिन्न अंग है। ऐसे में स्पाइसी फूड, गरिष्ठ भोजन तथा जंक फूड से दूरी बना लेना ही उचित है। पौष्टिकता से भरपूर सामान्य उत्तर भारतीय थाली प्रोटीन,कार्बोहाइड्रेट तथा विटामिन,दाल,हरी सब्जियां फाइबर युक्त मोटा अनाज और सोयाबीन को भोजन में प्राथमिकता दें। प्रतिदिन एक मौसमी फल अवश्य लें,जो इम्यूनिटी बूस्टर का काम करता है। मीनोपॉज अवस्था में बढ़ती उम्र तथा इस्ट्रोजनहार्मोन की कमी के कारण महिलाएं त्वचा एवं बालों का रूखापन एवं रिंकल्स के कारण हीन भावना महसूस करने लगती हैं। सौंदर्य के प्रति नकारात्मक भाव आते रहते हैं। ऐसे समय में शरीर को हाइड्रेटेड रखने के लिए अधिक से अधिक पेय पदार्थ जैसे छाछ, पना, जूस तथा जल का प्रयोग करना चाहिए। लोकल एप्लीकेशन क्रीम्स के स्थान पर आंतरिक सौंदर्य पर ध्यान दें। हर्बल प्रसाधनों केमिकल युक्त कॉस्मेटिक्स का एक बेहतरीन विकल्प है। कई रिसर्च संस्थानों ने एलोवेरा का प्रयोग त्वचा तथा सौंदर्य अभिवृद्धि के लिए प्रभावशाली बताया गया है। एलोवेरा जूस, जेल, शैंपू आदि का प्रयोग संपूर्ण सौंदर्य के लिए बेहतरीन उपाय है।

दिनचर्या में बदलाव

अधिकांश महिलाओं में शारीरिक परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप अचानक मीनोपॉज अवस्था में वजन बढ़ जाता है। समुचित वजन प्रबंधन के लिए दिनचर्या में बदलाव, कॉन्स्टिपेशन के लिए फाइबर युक्त आहार अत्यंत आवश्यक है। किसी विशेषज्ञ की सलाह के बगैर अंधाधुंध एक्सरसाइज न करें,क्योंकि शरीर की हड्डियों तथा जोड़ों में काफी परिवर्तन हो रहा होता है। सामर्थ्य अनुसार व्यायाम योगासन करें। आयुर्वेद के अनुसार शरीर में विषाक्त पदार्थ 'आम' के रूप में जमा हो जाते हैं और शरीर के सारे चैनल्स को ब्लॉक कर सेल्युलाईट डिपोजिशन कर देते हैं,उन्हीं टॉक्सिन पदार्थ निकालने के लिए 'पंचकर्म' एक बेहतरीन विकल्प है,जो शरीर को आंतरिक तथा बाह्य दोनों रूप से शुद्ध कर देता है।

मानसिक अवस्था को सुदृढ़ बनाना

मीनोपॉज को सुगम बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। अधिकांश महिलाएं साउंडस्लीप न होने की समस्या से ग्रसित रहती हैं। मूडस्विंग्स आदि के लिए योगासन, प्राणायाम तथा मेडिटेशन, शिरोधारा स्ट्रेसबस्टर्स का काम करते हैं। इन सभी के नित्य प्रतिदिन अभ्यास द्वारा उत्पन्न सकारात्मक सोच, एकाग्रता प्रदान करने में सहायक है। सोशल मीडिया द्वारा उत्पन्न नकारात्मकता, निकोटिन युक्त द्रव्य, कॉफी, सिगरेट तथा अल्कोहल से मीनोपॉज अवस्था में दूरी बनाना ही उचित है।

अधिकांश दंपति मीनोपॉज के कारण होने वाली महिलाओं में सेक्स ड्राइव में कमी के कारण को समझ नहीं पाते। अपेक्षा और उपेक्षा में संतुलन बनाने तथा सुदृढ़ दांपत्य हेतु परस्पर संवाद अत्यंत आवश्यक है। शारीरिक परिवर्तनों तथा उससे परिणति समस्याओं पर संवेदनशीलता पूर्वक अभिरुचि तथा विरक्ति पर विचार उम्र के इस पड़ाव पर आवश्यक है। जिम्मेदारियों से लगभग मुक्त होने के बाद स्वयं की किसी अभिरुचि पर काम करने का वक्त मीनोपॉज से ही प्रारंभ होता है। असमंजस के इस पड़ाव को सहजता और सुगमता से निकालने के लिए स्वयं को व्यस्त रखें। जीवन की आपाधापी में अथवा समय के अभाव में क्यों अधूरे कार्य शेष रह गए हो,उन्हें पुन: प्रारंभ कर पूर्ण करने का प्रयास करें। दायित्व के दौर में दूसरों की खुशियों का ख्याल रखने के साथ-साथ स्वयं के प्रति भी सजग बने। मेडिटेशन द्वारा स्पिरिचुअली मानसिक शांति पाने का प्रयास करें। मीनोपॉज एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मन की बात मन में न रखें दूसरों से अवश्य शेयर करें स्वयं में परिवर्तन लाएं तथा दूसरों को भी परिवर्तन के लिए प्रेरित करें।

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष – इस सप्ताह आपको अपनी प्रगति या पदोन्नति से जुड़ी कोई खबर प्राप्त हो सकती है। यह आपको और आपके परिवार को प्रसन्नता देगी। इसके फलस्वरुप आपकी पारिवारिक और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। आपको अपने बड़े भाई-बहनों का समर्थन, सहयोग और स्नेह मिलेगा।

वृष – इस सप्ताह आपको यात्राओं पर जाने की संभावनाएं बन रही हैं। इससे वर्तमान में बने तनाव पर काबू पाने में आप सफल रहेंगे। आपके पिता का समर्थन और प्रोत्साहन आपको आत्मविश्वास बनाए रखने में सहयोग करेगा। भाग पदोन्नति और हस्तांतरण की संभावनाओं का संकेत दे रहा है।

मिथुन – इस सप्ताह नए उद्यम शुरू करने के लिए समय अनुकूल नहीं है। आपको महत्वपूर्ण कार्यों के मध्य आने वाली बाधाओं के कारण आपके व्यवहार में बदलाव की समस्याएं आ सकती हैं। भाग आपके दूरस्थ अवधि की लाभकारी रहने वाली व्यावसायिक यात्राओं और धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल रहेगी।

कर्क – इस सप्ताह आपका जीवनसाथी के साथ सामंजस्य बहुत अच्छा रहेगा। साथ ही इस समय साझेदारों से भी संबंध बेहतर रहेंगे। वैवाहिक जीवन में आनंद बेहद रोमांचक रहेगा। आपके स्वास्थ्य और मन की स्थिति के लिए अशुभ हैं,लेकिन कार्यों के हालत में सुधार होने की संभावना है।

सिंह – इस सप्ताह शत्रु, ऋण और रोग से संबंधित मुद्दों को हल करने में परेशान रहेंगे। ऐसी योजनाओं को क्रियान्वित करने में आप व्यस्त रहेंगे,परंतु ऐसी योजनाएं सफल नहीं हो पाएंगी। योजनाओं की असफलता आपमें उत्साह की कमी कर सकती है। ऐसी योजनाओं को स्थगित करना ही लाभकारी रहेगा अन्यथा नुकसान हो सकता है।

कन्या – इस सप्ताह आपको संतान, स्वास्थ्य और भावनात्मक संबंधों से संबंधित कुछ अनावश्यक चिंता जो परेशान कर रही थी उनसे आपको राहत मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी, कम ऊर्जा, कम आत्मविश्वास, उत्साह कम और शत्रु अधिक प्रबल रहेंगे। ऋण और कानूनी मुद्दे व्यर्थ के दबाव का कारण बन सकते हैं।

तुला – इस सप्ताह आप अपनी माता के आशीर्वाद और परिवार के सहयोग से धन अर्जित करेंगे। इस समय आपको कुछ मानसिक तनाव भी होगा। भाग्य का सहयोग मिलने से व्यावसायिक जीवन और आय प्राप्ति के लिए शुभ रहेगा।

वृश्चिक – यह सप्ताह सामाजिक गतिविधियों के लिए शुभ रहेगा। ये गतिविधियां आपको शत्रुओं और कानूनी मुद्दों पर विजय प्राप्त करने में सहयोग देंगी। इसके अलावा यह अवधि शिक्षा, व्यापार और नौकरी से संबंधित प्रतियोगिता में सफलता पाने में बेहद अनुकूल रहेगी, आय क्षेत्रों में भी बढ़ोत्तरी होगी।

धनु – इस सप्ताह पारिवारिक दायित्वों का आप कुशलता से निर्वाह करेंगे। पारिवारिक प्रगति के विषयों पर आप दोनों हाथों से खर्च करेंगे। आपको दोस्तों और रिश्तेदारों का सहयोग मिलने से आनंद का अनुभव होगा। रिश्तेदारों और भाई-बहन सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों का समर्थन प्राप्त होगा।

मकर – यह सप्ताह आपके मन पर अतिरिक्त दबाव,घरेलू सुखों में कमी और पारिवारिक सदस्यों में आपसी स्नेह की कमी करेगा। आपको ऐसे में आत्मविश्वास और कार्यकुशलता को बरकरार रखना होगा। मां और जीवनसाथी के साथ संबंध उत्कृष्ट रहेंगे।

कुंभ – यह सप्ताह आपके लिए स्वास्थ्य, खुशी, आत्मविश्वास और धैर्य के लिए अनुकूल नहीं है। महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर पूरा करना मुश्किल होगा,क्योंकि कार्यों में अवांछित बाधाएं आ सकती हैं। आपको धैर्य बरकरार रखने की सलाह दी जाती है। इस समय कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से आपको बचना होगा।

मीन – इस सप्ताह आपको वित्तीय लाभ, आय के नए स्रोतों के सृजन की संभावना बन रही है। यह समय आर्थिक पक्ष से उत्कृष्ट रहेगा। परिवार के सदस्यों, बच्चों और भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में विफलता से आपकी खुशी, आत्मविश्वास और स्वास्थ्य प्रभावित होगा।

कर्ड राइस

कर्ड राइस बेहद पौष्टिक और स्वादिष्ट चावल की रेसिपी है,जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि कर्ड मतलब दही और राइस मतलब चावल,इन दोनों को मिलाकर जब थोड़ा चटपटा फ्लेवर देंगे तो बन जाती है चावल की स्वादिष्ट रेसिपी।

सामग्री

- चावल 1 कप
- दही पौना 2 कप (फेंटी हुई)
- तेल या घी 2 बड़े चम्मच
- हरी मिर्च 2 बारीक कटी हुई या स्वादानुसार
- नमक स्वादानुसार
- हरी धनिया पत्ती बारीक कटी हुई 2 बड़े चम्मच
- हींग 1 बड़ी चुटकी
- जीरा 1/2 छोटा चम्मच
- करी पत्ता थोड़ा सा
- राई या सरसों के दाने 1 छोटा चम्मच

सामग्री

सबसे पहले चावल को साफकर धुल लें, फिर 30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। पानी निथार कर एक प्रेशर कुकर में चावल को ढाई कप पानी और नमक डालकर एक सीटी लगा दें। पके हुए चावल को एक बड़े बाउल में निकाल कर रख दीजिए। पैन में घी डालकर गरम करें,इसमें जीरा,राई और हींग डाल कर चटकाएं। साथ ही हरी मिर्च और करी पत्ता डालें। तड़का लगने के लिए तैयार है। जब चावल ठंडे हो जाएं तो इसमें दही को अच्छे से बड़े चमचे से मिक्स करें, अब इसमें बारीक कटी हुई हरी धनिया डालें और मिक्स करें। हल्के हाथों से तैयार तड़का सामग्री मिलाएं और सर्व करें।
सुझाव- तीखा पसंद करते हों तो 2 सूखी लाल खड़ी मिर्च भी तड़के में डाल लें।

दो और दो प्यार

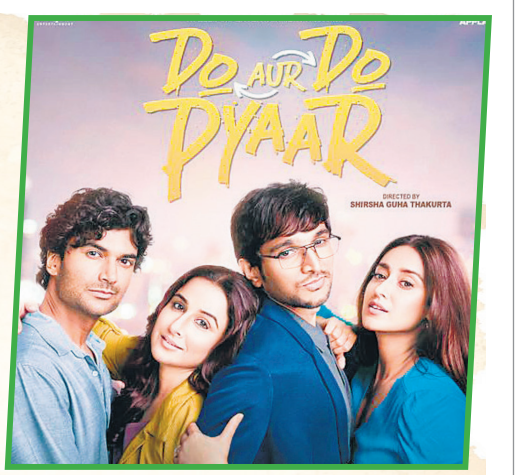

जो लोग कहते हैं कि बॉलीवुड में अच्छी फिल्में नहीं बनतीं। बॉलीवुड में सिवाय कचरे के कुछ नहीं बन रहा। उन्हें दो और दो प्यार फिल्म जरूर देखनी चाहिए। एक शांत पर नटखट सा प्रेम, हास्य और मन को सुकून देने वाली फिल्म। कहानी ऐसे पति पत्नी की है,जिन्होंने घर वालों की मर्जी के खिलाफ भागकर शादी की, परंतु शादी के बारह वर्ष बाद पति और पत्नी दोनों का ही प्रेम प्रसंग कहीं और चल रहा है। उन्हें फिर से एक दूसरे के साथ समय बिताने का मौका मिलता है और वो पास आने लगते हैं। फिर क्या होता है? क्या फिर से एक हो पाते हैं या अपने-अपने प्रेमी के पास चले जाते हैं। इसके लिए आप फिल्म देखिएगा। बहरहाल फिल्म बहुत प्यारी लगी। इसके लगभग सभी पहलू अच्छे लगे। इसकी निर्देशक शीर्षा गुहा ठाकुर जो शायद किशोर दा की भतीजी हैं की जितनी तारीफ की जाए कम है। निर्देशन बीजीएम पर ध्यान और सबसे महत्वपूर्ण फिल्म की स्टारकास्ट सब पर बखूबी काम किया है।

निर्मल कुमार

विद्या बालन, प्रतीक गांधी, इलियाना और सेंधिल ने अदाकारी में कमाल कर दिया है। प्रतीक गांधी का तो मैं स्कैम 92 से ही प्रशंसक बन गया हूं। विद्या तो विद्या है ही पर उसे अब सेलेक्टिव फिल्में ही करनी चाहिए। इलियाना खूबसूरत तो है,पर निर्देशक अच्छा मिले तो अदाकारी का भी गुण है। सेंधिल को मैंने पहली बार देखा और मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित उसी ने किया। उसका एक्सेंट (उच्चारण) मुझे भारतीय कम लगा। जिज्ञासा वश गूगल किया तो पता चला अमेरिकन एक्टर है। उसको उसी के हिसाब से किरदार में ढालना भी निर्देशक की खूबी रही।

थोड़ा सा यदि कुछ अखरा तो वो है अंत। बहुत जल्दबाजी में समेटा सा लगा,परंतु ओवरऑल फिल्म अच्छी लगी।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 81

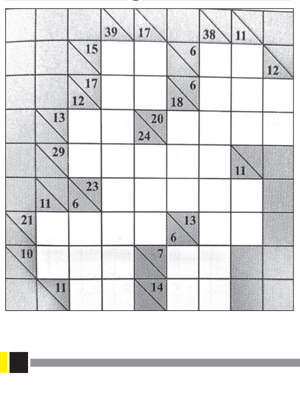

काकुरो 80 का हल

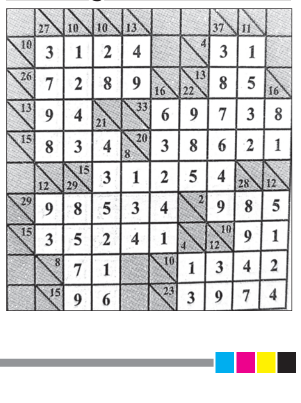

पहाड़ी लोकजीवन का पर्याय बना बुरांश

वानस्पतिक नाम : रोडोडेंड्रोन आर्बोरियम इसे बुरांश को बुरूश भी कहा जाता है। नेपाल में इसे लाली गुरांस और गुरांस के नाम से जाना जाता है। दरम्यान आकार की मोटी गाढ़ी हरी पत्तियों वाले छोटे से पेड़ पर सुर्ख लाल रंग के फूल खिला करते हैं। भारत के अलावा यह नेपाल, तिब्बत, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार, पकिस्तान, अफगानिस्तान, थाईलैंड और यूरोप में भी पाया जाता है।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

यह एरिकेसिई परिवार (एरिकेसी) की 300 प्रजातियों में से है। नए रिकेसिई परिवार की प्रजातियां उत्तरी गोलार्ध की सभी ठंडी जगहों में पाई जाती हैं। यह नेपाल का राष्ट्रीय फूल है। भारत के उत्तराखंड, हिमाचल और नागालैंड राज्यों में इसे राज्य पुष्प का दर्जा दिया गया है। हिमालय में इसकी चार प्रजातियां मिलती हैं। दक्षिण भारत में भी इसकी एक प्रजाति रोडोडेंड्रॉन निलगिरिकम नीलगिरी की पहाड़ियों में पाई जाती है।

उत्तराखंड में बुरांश आज भी पहाड़ी लोकजीवन के कई पहलुओं का पर्याय बना हुआ है। बुरांश का नाम आते ही पहाड़ के दृश्य आंखों के सामने तैरने लगते हैं। बसंत का मौसम, कई किस्म के पक्षी, फूल, लोकगीत, लोककथाएं, उत्सव, पर्व-त्यौहार सब याद हो आते हैं। उत्तराखंड से जुड़ाव रखने वाला साहित्य बुरांश की चर्चा के बगैर पूर्णता प्राप्त नहीं करता।

बुरांश पेड़ की ऊंचाई 36 फीट के आसपास तक होती है। सन् 1993 में नागालैंड के कोहिमा में जाफू की पहाड़ियों पर पाए गए 108 फीट ऊंचे बुरांश के पेड़ को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सबसे ऊंचे बुरांश के पेड़ के रूप में दर्ज किया गया है। यह पेड़ आज भी फल-फूल रहा है।

वसंत के मौसम की शुरुआत से ही बुरांश के पेड़ पर मध्यम आकार के लाल सुर्ख बुरांश खिलने शुरू हो जाते हैं। इसके भीतरी हिस्से में छोटे-छोटे काले धब्बे इसकी खूबसूरती में और ज्यादा निखार ले आते हैं। लाल रंग के अलावा बुरांश के फूल गुलाबी और सफेद रंग के भी मिलते हैं। यह भी देखा जा सकता है कि अलग-अलग ऊंचाइयों पर बुरांश लाल से बैंगनी,सफेद रंग तक के बीच की कई रंगतों में मिलता है। यह अम्लीय मिट्टी में छायादार स्थानों पर पनपने वाला पड़ है। इसकी मोटी मध्यम आकार की पत्तियां गाढ़े हरे रंग की होती हैं। पत्तियों की पिछली सतह चांदी के रंग की दिखती है।

उत्तराखंड का राजकीय पुष्प- आयुर्वेद में बुरांश का औषधीय इस्तेमाल बताया गया है। इसकी पत्तियां और फूल दवाएं बनाने के काम आते हैं। बुरांश की चटनी और जूस पहाड़ी क्षेत्रों में लोकप्रिय है। बुरांश का जूस दिल के मरीजों के लिए फायदेमंद माना जाता है। बुरांश के पेड़ को जमीन में पेयजल रोककर रखने वाले पेड़ों में गिना जाता है। यह पेयजल स्रोतों को बनाए रखने व रीचार्ज करने में भी उपयोगी है। बुरांश की लकड़ी से कुछ खास तरह के फर्नीचर और कृषि उपकरणों के हत्थे बनाए जाते हैं। सूख जाने पर इसकी लकड़ी जलावन का काम भी करती है।

बुरूंश का लाल फूल मेरे जेहन में लतिका के नाम से दर्ज है। लतिका के मन में गिरीश के नाम से दर्ज था। निर्मल वर्मा की स्याही से 'परिन्दे' के

नाम से दर्ज हुआ। कहानियां पढ़नी कब की छूट गईं। उम्र उस चौहद्दी से बाहर निकल आई। फूल अपनी शिनाख्त के लिए चौहद्दी के भीतर यादों के एक वक्फे पर जमकर बैठ गया। आठवें दर्जे से वहीं स्थिर है। पहाड़ों पर चढ़ते-उतरते बुरांश को देखा तो बहुत बार था। मुलाकात बिसर में हुई। वही धूप में नहाता नीला आकाश था। ओस में भीगा सर्द ठिठुरता कस्बा। देह से टकराते रूखी हवा के झोंके। नम घास की औंसी हुई महक। मद्धम पड़ा सूरज। पंडुक की गुटर-गूं तितलियां परिंदे और निर्बाध नीरवता। दहकती हुई बुरूंश की सुर्ख पंखुड़ियों पर दिप-दिप करती ठहरी हुई ओस की बूंद। मानो कोई याद उम्र की दूसरी चौहद्दी में मोती की मानिन्द हमेशा के लिए बिंध गई हो।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

अहिच्छत्र के पुरावशेष-छत्र

सबसे पहले केप्टन हाडग्सन ने सन् 1833 में एक बड़े स्तूप की तरफ ध्यान कि छत्र नाम से जाना जाता है। यह किले के पश्चिम की ओर एक मील (1.60 किमी) और इतनी ही दूरी पर आदि सागर और जगन्नाथपुर गांव के कुंडों से है। इस अधिकारी ने एक गैलरी खोदी। इस स्तूप में 21 फुट तक और उसके बाद एक कुआं खोदा,लेकिन इन खुदाइयों के परिणाम के बारे में कुछ ज्ञात नहीं है। कनिंघम ने भी एक बड़े स्तूप की खोज की जिसको अशोक द्वारा निर्मित आंका गया। इसके पास चार स्तूप और थे जिनका वर्णन ह्वेनसांग ने किया है। यह छत्र ईंटों का 40 फीट ऊंचा तथा 30 फुट आयताकार चोटी पर था। मूल रूप में इसका आयत 50 फीट था जिसमें 12 फीट 6 इंच मोटा अन्य आवरण सम्मिलित था। कनिंघम के अनुमान अनुसार इस पूरी इमारत की ऊंचाई 77 फीट थी। हाडग्सन की खोजी गैलरी का प्रयोग करते हुए,उन्होंने इसे आगे मध्य तक खोजा जिसमें शिखर पर निम्मन स्तंभाकार कूपक मिला और फिर नीचे के तय को खोदा गया वहां मिट्टी के पात्र एवं पदार्थ द्रव्य पाए जिसमें अंदर सेलखड़ी की पेटी के अंदर मोतियों के खंड, कुछ मणके और इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं मिलीं। एक पात्र नीचे गहराई में पाया इसमें केवल मृदा का टुकड़ा था। वर्तमान में अहिच्छत्र के निकटवर्ती ग्रामों में यह स्थान पिसनहारी के छत्र के साथ साथ केवल 'छत्र' एवं 'छदा' नामों से भी प्रसिद्ध है।

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' साहिब बुर्ज- मिस्टर नेविन ने बरेली गजेटियर में साबुज्ज अर्थात् साहिब बुर्ज के बारे में उल्लेख किया है। उनके अनुसार पूर्व की तरफ टीले 28-30 फुट ऊंचे तक हैं तथा दक्षिण-पूर्वी किनारे पर एक टीला सड़क से 47 फीट ऊंचा है,जो कि साहिब बुर्ज के नाम से जाना जाता है। यह टीला रामनगर से अनंदपुर को जाते हैं तब पड़ता है। यह किले से बाहर है तथा इसके सामने चंदनिया का पेड़ है। यह किसी बुर्ज का हिस्सा है,जो कि पचलित भाषा में साबुज्ज कहलाता है।

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' ध्वंस मंदिर- अहिच्छत्र किले की खुदाई के समय कनिंघम को अनेक आकार एवं प्रकार के टीले किले के बाहर मिले। इनमें से प्रथम किले के पश्चिमी गेट 1000 फीट की दूरी पर 300 फीट आयत में था,जबकि इसकी ऊंचाई 30 फीट थी। इसी के साथ उत्तर पूर्व की तरफ दो स्टीले भी थे। यह टीला मंदिर होना प्रदर्शित करता है। अंदर की तरफ 11 फीट चौकोर है। इसमें छोटा शिवलिंग मिला है तथा कनिंघम के अनुसार यहीं परिमाण में अस्थियां भी हैं,जो आभास देती हैं कि इसे ध्वस्त किया गया है।

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' नृसिंह प्रतिमाएं-लच्छिमपुर (लक्ष्मीपुर) ग्राम रामनगर से लगभग डेढ़ कि.मी. पश्चिम की ओर पर स्थित है। यहां मंदिर में एक पाषण प्रतिमा स्थापित है जिसका आगे का भाग है। दो पैर पर खड़ी प्रतिमा है जिसका मुख सिंह का है। कहा जाता है कि ये दो प्रतिमाएं थीं। एक अन्यत्र कहीं चली गई। यह कलात्मक गुलाबी रंग की हैं। यह अहिच्छत्र के किले से मिली हुई हैं।

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' टीले- पूरा अहिच्छत्र क्षेत्र टीलों के तथा ढेरों की खान है। पुराने भवन अथवा बस्तियां नष्ट हो गईं। तब उन्होंने ढेरों का रूप ले लिया। बहुत से ढेरों अथवा टीलों पर बस्तियां पुनः बस गई और भवन निर्मित हो गए। किले के अंदर टीलों के अतिरिक्त बाहर कई किलो मीटर चारों ओर टीले अब भी काफी ऊंचाइयों में मौजूद हैं। जगन्नाथपुर एवं मदकर गांव के बीच कई टीले हैं। कठौती, अनंदपुर, शिवनगर में 6-7 टीले हैं। आलमपुर कटौती के बीच टीला है। तिगरा खानपुर की मढ़ी टीले के ऊपर है। रामनगर पैट्रोल पंप के पीछे टीला है। कहते हैं कि यहां सोने के सिक्के मिले थे। आलमपुर से जाने वाली सड़क पर टीला है। नसरतगंज जाने वाली सड़क के दाहिने हाथ पर टीला है। रामनगर से हरदासपुर जाने वाली सड़क पर श्वेताम्बर मंदिर से आधा कि.मी. दूरी पर टीले है। रेवती बहोड़खेड़ा स्टेशन के पास रेवती ग्राम के पास टीले से एक मृण्मूर्ति सुअर की निकली तथा अग्निमित्र आदि की मुद्राएं यहां मिली है। करेंगी के पास जंगोरा गांव में एक टीला है। वहां भी पांचाल शासकों की मुद्राएं मिलती हैं।

मसमासी ताल- नसरतगंज ग्राम से पूर्व की तरफ तथा किले की सीमाओं से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर एक कुंड था मसमासी। यहां तालाब बना हुआ था। चारों तरफ मिट्टी की बाड़ बनी हुई है। अब यह ताल पट गया है। यहां की जमीन को समतल करके खेती योग्य बना लिया गया है,लेकिन अब भी यहां मूर्तियां एव ईंटें निकल आती हैं। यह लगभग 300 बीघा में होगी। यहां की इतनी मान्यता थी कि एक कहावत प्रचलित है- 'सौ काशी एक मसमासी।'

हिटलर और उसकी प्रेमिका ने की थी आत्महत्या

28-29 अप्रैल 1945 की आधी रात गुजर जाने के बाद फ्यूहरर बंकर में एक छोटा सा समारोह हुआ जिसमें हिटलर ने अपनी प्रेमिका ईवा ब्रौन से शादी की। मिलिटिरी स्टाफ से मौजूद लोगों ने दिखावटी खुशी का इजहार किया,क्योंकि आगे के अंजाम से सब वाकिफ थे।

असरार मेहदी
लखनऊ

इसके बाद हिटलर अपनी सचिव ट्रौडल जुनगे को दूसरे कमरे में ले गया और उसने कुछ निर्देश, अंतिम ख्वाहिश और वसीयतनामा लिखवाया। इसके बाद तकरीबन सुबह 4 बजे हिटलर ने हैन्स क्रेब्स,विल्हेम बर्गडॉर्फ,गोएबल्स और बोर्मन को तलब किया तथा दस्तावेजों को दिखाया और उनसे भी हस्ताक्षर कराए। इसके बाद हिटलर बिस्तर पर लेट गया।

29 अप्रैल की देर शाम क्रेब्स ने रेडियो द्वारा जोडल से संपर्क किया और पांच बिंदुओं पर तत्काल रिपोर्ट का अनुरोध किया। प्रथम वेनक की सेना के ठिकाने के बारे में सूचना तलब की गई थी। दूसरा हमला करने के इरादे के समय के बारे में। तीसरा नौवीं सेना के स्थान के बारे में, चौथा उस सटीक स्थान के बारे में जिसमें नौवीं को सफलता मिले और पांचवी यह कि सेना जनरल रुडोल्फ होल्स्टे की सेना कहां पर है।

30 अप्रैल की सुबह,जोडल ने क्रेब्स को उत्तर दिया: सबसे पहले, वेन्क की सेना श्वाइलो झील के दक्षिण में फंस गई है। दूसरे बारहवीं सेना बर्लिन पर हमला जारी रखने में असमर्थ थी। हालांकि यह सफलता पूर्वक पॉट्सडैम तक पहुंच गया। 12 वीं सेना को संख्यात्मक रूप से बेहतर सोवियत लाल सेना बलों

ने रोक दिया और बर्लिन को राहत देने के प्रयास को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया है।

तीसरा नौवीं सेना के बड़े हिस्से को घेर लिया गया है। चौथा होल्स्टे की सेना रक्षात्मक लड़ाई लड़ रही है।

बर्लिन के केंद्र सरकार जिले के कमांडर एसएस-ब्रिगेड फ्यूहरर विल्हेम मोहन्के ने 30 अप्रैल की सुबह हिटलर को सूचित किया कि उनके पास सैन्य सामग्री सिर्फ इतनी है कि वह दो दिनों से कम समय तक ही टिके रह सकेंगे। थोड़ी देर बाद वीडलिंग ने हिटलर को सूचित किया कि सेना का गोला-बारूद शायद उस रात समाप्त हो जाएगा और लाल सेना के घेरे को तोड़कर अंतिम लड़ाई की अनुमति मांगी। वीडलिंग को अंततः लगभग एक बजे दिन में यह अनुमति मिल गई।

हिटलर मायूस था, सब तरफ से ऐसी खबरें आ रही थीं जिनसे उसे अपना अंत दिखाई दे रहा था। दो दिन पहले उसे मालूम हो गया था कि हेनरिक हिमलर पश्चिम गठबंधन से समर्पण की शर्तें तय कर रहा है तभी तो हिमलर को गद्दार घोषित करते हुए उसके एस.एस. प्रतिनिधि हर्मन फेगेलीन को कोर्ट मार्शल के बाद गोली मार दी गई। यद्यपि वह उसकी पत्नी का बहनोई था।

हिटलर का दिमागी संतुलन बिगड़ता जा रहा था,उसके मुताबिक जर्मन नस्ल ने उसके साथ धोखा दिया। उसका मिशन अधूरा रह गया। दोपहर लगभग साढ़े तीन बजे उसने बड़ी हिम्मत से काम लिया और खुद को गोली मार ली, जबकि ईवा ने साइनाइड ले लिया। हिटलर के निर्देशों और अंतिम इच्छा के अनुसार उसके और ईवा के शवों को रीच चांसलरी के पीछे बगीचे में जला दिया गया।

संकट में ब्रिटिशकालीन धर्मशालाएं

गुलामी के दौर में जब पहाड़ों में पक्की सड़कों का निर्माण नहीं हुआ था और यात्राएं पैदल ही की जाती थी तब पिथौरागढ़ जनपद के धारचुला से आगे सीमांत गांव दातू की दानवीर जसुली देवी शौकयानी द्वारा दान दिए धन से हल्द्वानी से लेकर नेपाल, कैलाश मानसरोवर मार्ग और पश्चिम तिब्बत के तकलाकोट क्षेत्र तक 350 से अधिक धर्मशालाओं का निर्माण किया गया था। ये धर्मशालाएं उन मार्गों पर भी बनाई गई थी,जहां से भोटिया व्यापारी तिब्बत से व्यापार के लिए आवागमन किया करते थे।

इन धर्मशालाओं का निर्माण अंग्रेजों द्वारा 1840 के आसपास किया गया था। जल स्रोतों के पास,नदी के किनारे तथा कच्चे पैदल मार्गों के किनारे ये धर्मशालाएं बनाई गई थीं। इतिहासकारों के अनुसार हर दस से पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर इनका निर्माण किया गया। मतलब एक दिन में जितना पैदल चला जा सकता था, उतनी ही दूरी पर इन्हें बनाया गया। इन धर्मशालाओं का वर्णन 1870 में अल्मोड़ा के तत्कालीन कमिश्नर शेरिंग की यात्रा वृत्तांतों में भी मिलता है।

लेखक शक्ति प्रसाद सकलानी की पुस्तक 'उत्तराखंड की विभूतियां' के अनुसार दानवीर जसुली देवी शौकयानी जन्म सीमांत कस्बे धारचुला से आगे दारमा घाटी के दातू गांव में 1805 में हुआ था। जसुली देवी शौका समुदाय से ताल्लुक रखती थी,इसलिए उसे शौकयानी कहा गया। जसुली का विवाह उसी गांव के अमीर परिवार के युवक जंबू सिंह के साथ हुआ। यह परिवार तिब्बत के साथ व्यापार से जुड़ा था इसलिए इनके पास काफी धन दौलत थी। जसुली का एक बेटा हुआ पर अल्प आयु में ही उसका देहांत हो गया। कुछ साल बाद जंबू सिंह का भी निधन हो गया। जंबू सिंह ने मरने से पहले जसुली को खेत में दबाए गए धन के बारे में बताया।

पति की मृत्यु से जसुली देवी टूट गई थी। उसने निर्णय लिया यह अपार दौलत अब उसके किसी काम की नहीं, इसलिए,सारी दौलत को नदी में बहा दिया जाए। जब वह कुछ लोगों के साथ मिलकर ऐसा कर रही थी,उसी समय अंग्रेज अफसर सर हेनरी रैमसे दातू गांव के दौरे पर थे। उन्होंने देखा कि एक महिला न्यूला नदी व धौलीगंगा के संगम पर पुरोहितों के साथ अनुष्ठान कर रुपये से भरे बोरे को पानी में बहा रही है। पता चला कि मृत पति के अंतिम संस्कार के बाद नदी में रुपये बहाकर परोपकार का अनुष्ठान कर रही है और उसका मानना है कि ऐसा करने से पति की आत्मा को शांति मिलेगी।

दीपक नौगाईं
शिक्षक, नैनीताल

अंग्रेज अफसर ने जसुली देवी के पास गए और उसे ऐसा करने से रोका और समझाया कि इस धन दौलत का इस्तेमाल जनहित में किया जाए। पहले तो जसुली देवी ने आनाकानी की पर अंग्रेज अफसर के बहुत समझाने पर आखिरकार मान गई। जसुली ने कैलाश मानसरोवर और तिब्बत मार्ग पर धर्मशालाओं के निर्माण की इच्छा जाहिर की। अंग्रेज अफसर ने ऐसा ही करने का वादा किया और 350 से अधिक धर्मशालाएं बनवाईं। इनमें चार से लेकर आठ कमरे होते थे। कमरों का आकार छोटा होता था जिसमें तीन से चार व्यक्ति आसानी से रह सकें। पत्थर से बनी इन धर्मशालाओं में लकड़ी व लोहे का इस्तेमाल नहीं किया गया था। कमरों में खिड़कियां नहीं हैं तथा दरवाजे भी नहीं होते थे।

1970 के उपरांत सीमांत तक पक्की सड़क बन जाने के बाद धर्मशालाएं उपेक्षित हुईं और खंडहर में तब्दील होने लगीं। कुछ सालों से दारमा घाटी की रंड समिति इन धर्मशालाओं को खोजने और संरक्षित करने के प्रयासों में जुटी हुई है। समिति ने अब तक 130 धर्मशालाओं को खोजने में सफलता पाई है। कई धर्मशालाओं पर स्थानीय लोगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है। कुछ धर्मशालाओं पर लोगों ने दुकानें खोल दी है। समिति को 25 धर्मशालाएं नेपाल के पाटना, बैतड़ी और उससे लगे क्षेत्रों में मिली हैं। तिब्बत सीमा पर भी एक धर्मशाला खोजी गई है। पिथौरागढ़ के सतगढ़ और नैनीताल जिले में अल्मोड़ा मार्ग पर खैरना से आगे काकड़ीघाट के पास स्थित धर्मशाला को समिति द्वारा सुधारा गया है। नैनीताल जनपद के भवाली नगर में मुख्य बाजार में स्थित जसुली देवी धर्मशाला को दो साल पहले निवर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष संजय वर्मा द्वारा राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान की मदद से म्युजियम का रुप दिया गया है। हल्द्वानी से आगे नैनीताल मार्ग पर रानीबाग में चित्रशाला घाट के रास्ते पर गौला नदी के किनारे भी एक धर्मशाला है। रंड समिति ने उत्तराखंड सरकार से लुप्त होती इन धर्मशालाओं को पुरातत्व धरोहर घोषित करने की मांग की है ताकि इनकी सुरक्षा और संरक्षण हो सके जिससे आने वाली पीढ़ी भी इनके बारे में जान सके।

सलीम से जहांगीर... एक शहजादे से बादशाह तक

अबुल फजल की हत्या: बादशाह अकबर ने अपने बिगड़ैल शहजादे सलीम को उसकी विद्रोही प्रवृत्ति को सुधारने के लिए परामर्श प्राप्त करने हेतु अबुल फजल को दक्षिण से वापस आने का आदेश दिया था। अबुल फजल बादशाह का विद्वान परामर्शदाता था। कामगार खां ने लिखा है कि, "एक फरमान भेजकर उसे यह आदेश दिया गया कि वह (अबुल फजल) अपने पुत्र को दक्षिण सेना के साथ छोड़कर अकेला ही दरबार में आए।"

बीती कई घटनाओं से यह स्पष्ट था कि शहजादा सलीम अबुल फजल के प्रति दुराग्रह रखता था। उसे आशंका हुई कि यदि अबुल फजल दरबार में पहुंच जाएगा तो वह बादशाह के मन में संदेह उत्पन्न कर उन्हें मेरे विरुद्ध कर देगा। सलीम ने यह भी सोचा कि दरबार में अबुल फजल की उपस्थिति के कारण उसका वहां प्रवेश संभव न हो सकेगा और उसे उसके वैध अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा। अतः उसने ओरछा के राजा मधुकर शाह के पुत्र राजा नृसिंह देव उर्फ बीर सिंह देव को बुलाया तथा शीघ्र अबुल फजल की हत्या करने के लिए षड्यंत्र रचा।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

जब अबुल फजल उसके राज्य से जा रहा था तब उसने रास्ता जरूर छोड़ दिया,परंतु थोड़ी सी मुठभेड़ के पश्चात उसके सेवक छिन्न-भिन्न हो गए और वह स्वयं मारा गया। यह घटनाक्रम ग्वालियर के पास आंतरी गांव का है। दरअसल अबुल फजल को धूल से एलर्जी थी। वह अपनी सैनिक टुकड़ी से आगे चला करते, ताकि धूल उनकी एलर्जी को और न बढ़ाए। इसी कारण से वह अपना डेरा भी सैन्य बटालियनों से दूर लगवाते थे। यह स्थिति वीर सिंह देव के लिए लाभप्रद थी और उसने आसानी से 19 अगस्त 1602 ईसवीं को यह घृणित कृत्य अंजाम दे दिया।

अबुल फजल के कत्ल की इस घटना का वर्णन 'वकाए असद बेग' में यूं किया गया है-

वीर सिंह के हर सिपाही ने कवच पहन रखे थे। उनकी तलवारें और भाले हवा में बिजली की तरह चमक रहे थे। तेज भागते घोड़े पर सवार एक राजपूत ने अबुल फजल पर बर्छे से इतनी तेजी से वार किया कि वो उनके शरीर के दूसरे हिस्से से बाहर निकल गया। फजल नीचे गिरे और उनके शरीर से खून तेजी से निकलने लगा। उनका खुद का घोड़ा उन्हें रौंदता हुआ निकल गया। ताज्जुब है कि घोड़े के भार से उनकी मौत नहीं हुई। फजल अभी जीवित थे कि वीर सिंह वहां पहुंच गए। वो उनकी बगल में बैठ गए। उन्होंने अपनी जेब से एक सफेद कपड़ा निकाला और फजल के जिस्म से निकल रहे खून को पोंछने लगे। इसी समय फजल ने अपनी सारी ताकत जुटाते हुए बुंदेला प्रमुख को गद्दारी के लिए उसे कोसा। वीर सिंह ने अपनी तलवार निकाली और एक झटके में अबुल फजल का सिर उनके धड़ से अलग कर दिया।

अबुल फजल का कटा हुआ सिर एक विश्वस्त नौकर के साथ इलाहाबाद शहजादे सलीम के पास भेजा गया जिसने इस संपूर्ण वृत्तांत को उन्हें बताया। सलीम प्रसन्न हुआ कि अब उसके पिता को अपने इस बेटे के विषय में सलाह देने वाला उनका विश्वस्त सलाहकार नहीं रहा। इन परिस्थितियों में बरखी सराय और आंतरी के बीच हुई यह दुखद घटना अकबर के लिए आहत कर देने वाली थी। क्रोधित बादशाह अकबर ने शहजादे सलीम के प्रति आक्रोश अभिव्यक्त किया और वीर सिंह को मृत्युदंड का आदेश दिया,परंतु वह निकल भागा। आगे चलकर वह बादशाह बनने के बाद जहांगीर का कृपापात्र बना।

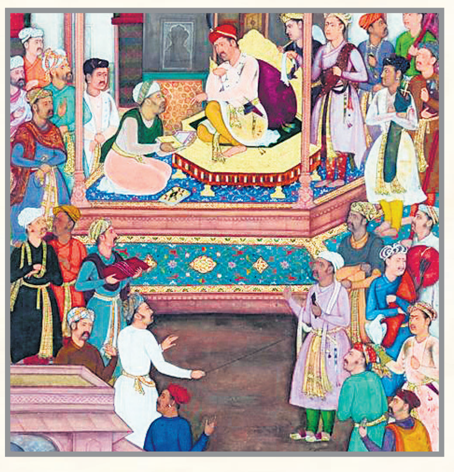

यह स्थिति बताती थी कि बादशाह अकबर और उनके शहजादे सलीम के रिश्ते कभी सामान्य नहीं रहे। यह तथ्य है कि अबुल फजल की नजर में जहांगीर कोई ऊंची जगह नहीं रखते थे,लेकिन क्या सिर्फ यही वजह थी उनको मरवाने की? दरअसल यह एक राजनीतिक खेल था कि गद्दी पर कौन बैठेगा? अकबर की शक्तियां क्षीण हो रही थी। वो अब थक रहे थे और जहांगीर को अब आने वाली पीढ़ी से लड़ाई करनी थी, यह जानना वाकई एक विचित्र अनुभव था।

कहते हैं कि जब अकबर को अबुल फजल की हत्या की खबर मिली तो वह मूर्छित हो गए। जहांगीर इसके बारे में बिना किसी ग्लानि के अपनी आत्मकथा "तुजुक-ए-जहांगीरी" में लिखते हैं कि "यह मेरा किया एक अपराध था।" इतिहास में यह भी उल्लेखित है कि अंततः जहांगीर जब अबुल फजल के बेटे से मिलते हैं तब भी उनके मन में इस घटना को लेकर कोई ग्लानि अथवा अपराध बोध नहीं रहता। वह साफ लिखते हैं कि मेरा उद्देश्य था बादशाह बनना। अगर अबुल फजल वापस दरबार में पहुंचते तो मैं फजल की बातों के दबाव में बादशाह नहीं बन पाता।

इसके बाद भी सन् 1602 ईसवीं में विद्रोही शहजादे सलीम ने औपचारिक रूप से 'बादशाह' की पदवी धारण कर दरबार आहूत किए। उसने अपनी बुरी भावनाओं को नहीं छोड़ा और एक संप्रभु बादशाह के समान नियमित रूप से दरबार लगाना,फरमान जारी करना,मनसबों तथा जागीरों का वितरण करना जारी रखा। शहजादे ने विदेशी सहायता प्राप्ति तथा सेना के संगठन के लिए तत्परता दिखाई जिसके लिए राज्यों के प्रमुखों से संपर्क स्थापित किया। उसने गोवा के प्रांतीय अधिकारी से अपने दरबार में प्रमाणपत्रों सहित मिशनरी पादरियों को भी उपस्थित होने का अनुरोध किया और सैनिक सफलता प्राप्त करने के भी प्रयास किए, पर वह असफल रहे,क्योंकि उनकी मंशा इसी प्रकार की थी।

इस महत्वपूर्ण किस्से की दिलचस्प बात यह है कि अबुल फजल का बेटा बाद में जहांगीर के विश्वसनीय मंत्री के तौर पर उभरता है। शायद उसे भी पता था कि यह जीवन ऐसा ही है और यह इस कृत्य के लिए,शहजादे से बादशाह बने इस व्यक्ति को सजा दिलाने की कुव्वत नहीं रखता था। फिर उसके पिता और मुल्क के बादशाह अकबर, जिन्हें महान कहा जाता है, उन्होंने भी पुत्र मोह में ही सही,उसे क्षमादान तो दे ही दिया था। इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि सलीम को पिता का अत्यधिक व्यवहार के अनुरूप ही उचित दंड मिलना चाहिए था और ऐसा न करने से अकबर के चरित्र पर स्वयं एक दाग लगता दिखता है।